माधव-सुमनाञ्जलि
केशवराम गोविन्दराम जोशी

माधव-सुमनाञ्जलि

लेखक तथा प्रकाशक

केशवराम गोविन्दराम जोशी,

नया बाजार, लश्कर, ग्वालियर स्टेट।

मुद्रक

आलीजाह दरबार प्रेस, ग्वालियर।

द्वितीय संस्करण } १९४० { मूल्य ॥)

समर्पण

हर हाइनेस श्रीमती मातेश्वरी

महाराणी चिनकूराजा साहिबा सेंधिया, सी० आई०

की

पवित्र सेवा में

" माधव-सुमनाञ्जलि "

नम्रतापूर्वक अर्पित ।

ग्वालियर,
ता: ५ मई सन् १९३० ई०

स्वामिभक्त,
केशवराम गोविन्दराम जोशी ।

प्रथम संस्करण

मातृ-पूजा का स्थान कितना ऊँचा है, यह हमारे आर्य बांधवों को विशेष रूप से बतलाने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि इस पुण्य-भूमि भारतवर्ष में माताओं का ईश्वर-तुल्य पूजन आधुनिक समय में ही क्या, वरन् पूर्वकाल से सतत चला आता है। जिन ध्रुव और प्रल्हाद सरीखे सुपुत्रों ने अपनी माताओं को ईश्वरवत् जानकर उनका पूजन किया है, उनकी कीर्ति संसार में सदा के लिये स्थायी हो गई है। पाश्चात्य जगत के ऐलेक्जेंडर दी ग्रेट, नेपोलियन बोनापार्ट तथा भारत के प्रातः स्मरणीय छत्रपति शिवाजी महाराज का नाम आज संसार में आबाल-वृद्ध सब कोई जानते हैं। इन महानुभावों की ख्याति एकमात्र अपनी माता की ईश्वरतुल्य पूजा करने से ही हुई है।

हमारे चरित-नायक महाराज सर माधवराव सेंधिया भी इस बीसवीं शताब्दी में अपनी माता का पूजन करने से ही संसार में यशस्वी हुए थे। अपनी परमात्म स्वरूपा जननी के हार्दिक आशीर्वाद से ही आप में अनूठे सद्गुणों का जन्म हुआ था, जिनके कारण वे भारत के राजा-महाराजाओं की कोटि में किस प्रकार सदा के लिये एक सम्माननीय आदर्श व्यक्ति हो गये हैं, यह सब को भली-भाँति विदित है।

महाराज ने जिस काल में जन्म लिया था, जिस वातावरण में उनका पालन-पोषण और शिक्षण हुआ था, उसका एक ओर

ध्यान करके और दूसरी ओर उनकी ठहराई हुई शासन-नीति और उसके फलों को दृष्टि में रख कर जब विचार किया जाता है तो आश्चर्य की सीमा नहीं रहती। सब से बड़ी और विलक्षण बात यह है कि आपने अपने विस्तृत राज्य को सर्वदा ईश्वर की धरोहर समझ कर उसके प्रति अपने कर्तव्य का अगाध परि-श्रम से पालन किया। आपने राज्य की आय को कभी अपनी निजी आय नहीं समझी और न कभी उससे विलासिता का भोग किया, वरन् अपनी आश्रित प्रजा के अनेक हित-साधनों में दान, धर्म और परोपकार के रूप में उसका सदुपयोग किया था।

आप अनेक आदर्श गुणों से सुशोभित थे। आप एक योग्य शासक, उत्कृष्ट सैनिक, अविश्रांत परिश्रमी, आत्मश्लाघा रहित और अतिथियों का सत्कार करनेवाले तथा परम मातृभक्त थे। आप शिकारी खेलों के सिद्धहस्त खिलाड़ी और अतुल लक्ष्मी के अधिपति थे। आप बड़े दयावान, धर्मात्मा और साथ ही बड़े विनोद प्रिय भी थे।

आपको अपने राज-कार्य में और अपनी प्रजा के अनेक उपकारों के कार्यों में सच्चा आनंद आता था। आपने अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य अपनी प्रजा की सेवा करना ठहरा लिया था। आप आवश्यकता पड़ने पर लगातार सोलह सोलह और अठारह अठारह घंटे अपने स्थान पर जमकर काम किया करते थे। शासन के प्रत्येक विभाग पर आपकी सर्वदा कड़ी दृष्टि रहती थी। राज्य के कर्मचारियों को सर्वदा यह भय बना रहता था कि महाराज मेरे पीछे ही खड़े हैं। आप साधारण से साधारण प्रजा की शिकायतों की सत्यता पर बड़े से बड़े अधिकारी का एक क्षण

में मानमर्दन कर दिया करते थे। बड़े-बड़े नामांकित राज्याधिकारियों की प्रतिष्ठा या गौरव आपके सुशासन के मार्ग में कभी बाधक नहीं होने पाता था।

पाठकों से यह बात छिपी नहीं है कि ग्वालियर राज्य की आधुनिक संस्थाओं के पिता और भारत तथा पश्चिम की अनेक संस्थाओं के सहायक महाराज सर माधवराव सेंधिया थे।

आप केवल उत्कृष्ट राज-शासन से ही प्रजा में इतने प्रिय नहीं हुए थे, वरन् प्रजा को संतुष्ट करने के लिये उनके नैतिक तथा सामाजिक उत्सवों में बड़े प्रेम से, अपने अमूल्य समय में से अवकाश निकाल कर, योग दिया करते थे। ग्वालियर का खेल, ग्वालियर का राग-रंग, ग्वालियर का उद्योग, ग्वालियर का व्यवसाय, ग्वालियर का धर्म और ग्वालियर की प्रजा में हेल-मेल तथा ग्वालियर की नीति महाराज माधवराव में समाविष्ट थी।

अन्त में उस चराचर-नायक परमात्मा को कोटिशः हार्दिक धन्यवाद है जिसकी दया के कारण यह छोटी सी पुस्तक छपकर प्रिय पाठकों के हाथ में पहुँची है। इस पुस्तक के लिखने का आरम्भ करने के पश्चात् मुझे एक के पश्चात् एक नाना प्रकार की कठिन कौटुम्बिक तथा जीविका-सम्बन्धी आपत्तियों ने घेर कर मेरे चित्त की शान्ति को भंग कर दिया था, जिनके कारण पुस्तक को समाप्त करना अत्यन्त कठिन हो गया था। परन्तु भगवद्भक्त तुलसीदासजी के इस वाक्य—

"धीरज, धरम, मित्र अरु नारी।
आपति काल परखिये चारी॥"

के अनुसार मेरी सद्चारित्रा और परिश्रमी गृहिणी के गम्भीर विचार और धैर्य धारण करने की अपूर्व शक्ति के प्रताप से संपूर्ण मानसिक क्लेशों का धीरे धीरे लोप होता गया और पुस्तक के समाप्त करने की लालसा जाग्रत बनी रही और पिछले अक्टूबर मास में यह समाप्त हुई ।

भगवती सरस्वती की कृपा से मेरी लिखी "अहल्याबाई होलकर" नामक पुस्तक नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस द्वारा सन् १९२० ई० में प्रकाशित हुई थी और वह इस वर्ष नागपुर यूनिवर्सिटी में बी० ए० क्लास की पाठ्य पुस्तकों में स्थान पा गई है ।

वैकुण्ठवासी महाराज सर माधवराव सेंधिया का सुन्दर जीवन-चरित्र आंग्ल भाषा में कर्नल कैलासनारायण हक्सर, सी० आई० ई०, और मिस्टर एच० एम० बुल ने लिख कर प्रकाशित किया है । उस पुस्तक से अंग्रेजी भाषा के विद्वान् अवश्य ही लाभ उठावेंगे । परन्तु हिन्दी भाषा-भाषी जनता के हितार्थ यह पुस्तक इस अभिप्राय से लिखी गई है कि जिससे पाठकों को यह भली-भाँति प्रगट हो जाय कि बीसवीं सदी के महाराज सर माधवराव सेंधिया किस अद्भुत शक्ति के व्यक्ति हो गये हैं और उन्होंने अपनी आश्रित प्रजा के हितार्थ किस-किस प्रकार दिन-रात अगाध परिश्रम कर अपने विपुल धन का सदुपयोग किया है ।

इस पुस्तक को लिखने के लिये जिन जिन सज्जनों ने मुझे उत्साहित किया है, उन सब का मैं अत्यन्त आभारी हूँ । पं० एन० वी० उपासनी, बी० ए० और पं० वेणीप्रसादजी त्रिपाठी को

मेरा बारंबार धन्यवाद है जिन्होंने अपना समय निकाल कर इस पुस्तक का अवलोकन किया और मुझे परामर्श दिया। अन्त में काशी के बाबू रामचन्द्रजी वर्मा और व्यवस्थापक लक्ष्मीनारायण प्रेस, बनारस का भी मैं बहुत अधिक आभारी हूँ जिन्होंने क्रमशः इस पुस्तक की भाषा आदि ठीक करने और छाप देने की कृपा की है।

नयाबाजार, लश्कर (ग्वालियर).
तारीख ५ मई सन १९३० ई०

निवेदक—
के० जी० जोशी।

द्वितीय संस्करण

"माधव-सुमनाञ्जलि" का यह द्वितीय संस्करण पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करने का आज परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है। प्रथम संस्करण को साहित्य-प्रेमी जनता के सामने आकर दस वर्ष का दीर्घकाल व्यतीत हो चुका, हर्ष का विषय है कि इस "सुमनाञ्जलि" को आबाल-वृद्धों ने बडे प्रेम से और निस्सीम श्रद्धा से स्वीकार किया है। अब भी आशा है कि हमारे पाठकगण उसी आदर-प्रेम पूर्वक इस द्वितीय सस्करण को भी अंगीकृत करेंगे।

नयाबाजार, लश्कर.
ताः ८ अप्रेल सन १९४० ई० } केशवराम गोविन्दराम जोशी।

विषय-सूची

"Lives of great men all remind us
We can make our lives sublime,
And, departing, leave behind us,
Foot-prints on the sands of time."

Longfellow.

शुद्धि पत्र

अशुद्ध.	शुद्ध.	लाइन.	पृष्ठ संख्या.
क	के	१	३
क	के	१८	९
सचत	सचेत	१९	१२
जना	जनों	१२	१३
शीघ्रत	शीघ्रता	१३	१७
पुत्रवधु	पुत्रबधू	१२	१८
पुत्रबधु	पुत्रबधू	८	१९
प्रथक	पृथक	१	२०
संबधी	सम्बन्धी	६	२०
आपत्तिया	आपत्तियां	५	२३
सचालक	संचालक	६	२५
सबंध	सम्बन्ध	१५	२६
परिम्रमण	परिभ्रमण	७	२७
न	ने	२२	२७
आपक	आपके	९	२८
आर	और	५	३३
डा	डी	९	३३
का	की	१२	३३
इस्तमाल	इस्तेमाल	११	३५
प्रथक	पृथक	६	३७

अशुद्ध.	शुद्ध.	लाइन.	पृष्ठ संख्या
आशिवाव ..	आशीर्वाद ..	२१	३९
करन	करने	१६	४०
कार्या	कार्यों ..	२२	४१
क	के	२	४२
नींब	नींव	२	४३
सम्वधी	सम्बंधी	२२	४३
संम्बधी	सम्बंधी	८	४५
.. ..	हैं	३	४७
क	के	७	४८
लिय	लिये	१५	५१
हं	हैं	६	५३
करत	करते	१३	५३
तारगणों ..	तारागणों ..	३	५७
कंगालो ..	कंगालों ..	३	६०
लिय	लिये	८	६१
मग	मृग	१९	६५
सहस्त्रों ..	सहस्रों	५	६६
स	से	१२	६९
दीनो	दीनों	१७	६९
निशानी ..	निशाना ..	२३	६९
बह्मानद ..	ब्रह्मानंद ..	७	७०
क	के ..	१९	७०
दूरदर्शी ..	दूरदर्शी ..	३	८०
.. ..	पर	१६	८९

श्रीमंत स्वर्गीय महाराज सर माधवराव सेंधिया, आलीजाह बहादुर,
जी० सी० एस० आई०, जी० सी० बी० ओ०, जी० बी० ई०, एल-एल० डी०,
डी० सी० एल०, एँ० डी० सी० टु हिज मेजिस्टी दी किंग एम्परर ।
१८७६–१९२५

माधव-सुमनाञ्जलि

श्रीमान् महाराज माधवराव सेंधिया का जन्म और विद्याभ्यास

जगत्-प्रसिद्ध सेंधिया राज्य के संस्थापक स्वामि-भक्त महाराज महादजी सेंधिया ने पानीपत के रणस्थल पर अपने एक मात्र भतीजे को अपने सन्मुख मरण-शय्या पर पड़ा हुआ देख यह विचार किया कि यदि मैं भी स्वयं लड़ते लड़ते इस युद्ध में काम आया तो आज ही इस सेंधिया वंश की परिसमाप्ति हो जायगी और पैतृक-ऋण का चुकानेवाला कोई भी नहीं रहेगा। यह सत्य है कि रण में मरना क्षत्रियों के लिये परम-पद की प्राप्ति है, मेरे लिये स्वर्ग का द्वार खुला है; परन्तु इस समय मेरे लड़ने से भी ये साहसी और कट्टर विपक्षियों की सेना पीछे हटनेवाली नहीं जान पड़ती। और कदाचित् इस क्षेत्र में हम भी काम आ गये तो केवल पेशवाओं की हार ही न होगी, वरन् मेरे पश्चात् सेंधिया वंश की भी आज से समाप्ति हो जायगी। इस समय असंख्य नामांकित वीरों के नष्ट हो चुकने पर भी मैं स्वयं महाराष्ट्रों की विजय-लक्ष्मी को प्राप्त कर सकूं, यह अत्यन्त दुर्लभ है।

यदि प्राण रहेंगे और परमात्मा अनुकूल होंगे तो इसी बाहुबल से महाराष्ट्रीय कीर्ति को नष्टप्राय होने से बचाऊंगा और अनेक स्थानों पर महाराष्ट्रों की यशस्वी-पताका स्थायी रूप से रोप दूंगा।

इस प्रकार पूर्ण विचार कर आप नाना प्रकार के जान जोखों-वाले संकटों से बच कर जब हतोत्साह और म्लान-मुख हो पेशवा सरकार के दरबार में उपस्थित हुए और पानीपत का संपूर्ण ब्योरा कह सुनाया तथा अपने भविष्य की विजयप्राप्ति की दृढ़ प्रतिज्ञा कह सुनाई, तब सरकार पेशवा ने आपको नाना प्रकार से धैर्य दिलाते हुए भविष्य में विजयी होने के लिये नाना प्रकार से प्रोत्साहन दिलाया और आपको सन्मानित करने के हितार्थ वंश-परंपरा के लिये जागीर नियत कर दी।

सन् १७६४ ई० में पुनः महादजी सेंधिया ने मालवा देश पर विजय प्राप्त कर अपनी यशस्वी-पताका स्थापित की और आगे दिल्ली की ओर बढ़ते हुए महाराष्ट्र राज्य का विस्तार करने में आप कटिबद्ध हुए। आपने अपने बहादुर वीरों को उत्साहित करते हुए अपने अनेक सैनिकों को विजयप्राप्ति के हितार्थ युद्ध में लड़ते हुए विपक्षियों के धन-जन का नाश करते हुए सन् १७८२-८३ ई० में प्रसिद्ध ग्वालियर के दुर्ग पर गोहद, भिन्ड, तवरघार, सिकरवारी और सबलगढ़ प्रान्तों पर विजय प्राप्त कर अपना भगवा झण्डा स्थापित किया।

महाराज महादजी सेंधिया के अनन्तर क्रमशः महाराज दौलतराव, महाराज जनकोजीराव और महाराज जयाजीराव ने

प्रसिद्ध सेंधिया वंश को उज्ज्वल किया। उन्नीसवीं सदी के पूर्व भाग में जिन भारतवर्षीय महाराजाओं ने अपनी वीरता, धीरता, बुद्धिमत्ता, निपुणता और प्रजा-पालन आदि सद्गुणों से संसार में यश प्राप्त किया था, उनमें महाराज जयाजीराव सेंधिया का स्थान बहुत ऊंचा है।

महाराज जयाजीराव सेंधिया तक इस वंश में दत्तक पुत्र लिये गये थे; परन्तु अपने पूर्व सत्कर्मों के फल से, अपने दान-धर्म की प्रबल सहायता से और परमात्मा की असीम कृपा से आपकी प्रौढ़ावस्था में अर्थात् ४२ वर्ष की अवस्था में हमारे चरित्र-नायक महाराज माधवराव सेंधिया ने श्रीमती महारानी सख्या राजा साहिबा (जो जीजा महारानी के नाम से प्रख्यात हुई) के कोख में जन्म लिया। आपका जन्म तारीख २१ अक्टूबर सन् १८७६ ई० को हुआ। आपके जन्म लेने से ग्वालियर राज्य की समस्त प्रजा को बहुत आनन्द हुआ। आपको १० वर्ष की अवस्था में दैवयोग से सदा के लिये पिता के वियोग का दुःख सहन करना पड़ा; परन्तु सुशिक्षिता, बुद्धिमती मातेश्वरी ने आपको नाना प्रकार के आमोद-प्रमोद और लाड़-चाव से पालन करते हुए पितृ-वियोग रूपी अग्निज्वाला से केवल सुरक्षित ही नहीं रखा, वरन् राजनीतिज्ञ बनाते हुए गुणवान्, ज्ञानवान्, आचार तथा विचारवान्, हितैषी और दूरदर्शी, कीर्तिशाली, और दयावान् बनने की शिक्षा स्वयं आत्मानुभव से तथा योग्य और विचारशील शिक्षकों के द्वारा दिलवाई, जिससे महाराज अत्यन्त प्रभावशाली शासक और मातृभक्त सुपुत्र सिद्ध हुए।

बाल महाराज को उनकी अल्प अवस्था में प्राथमिक शिक्षा संपादन कराने के हितार्थ निम्न लिखित सुचरित्र शिक्षकों की योजना की गई थी:—

पंडित गोपालपंत गुरुजी ने मराठी,

पंडित प्राणकिशन साहब ने उर्दू और अंग्रेजी तथा

पंडित आनन्दीलालजी ने गणित और भूगोल

की शिक्षा दी थी। पश्चात् आपकी किशोर अवस्था में शिक्षा के लिये बड़े बड़े अनुभवी और योग्य पुरुषों की बड़ी चतुराई से योजना की गई, जिनकी पूर्ण योग्यता तथा कार्यपटुता का परिचय भारत सरकार को, बड़े बड़े विद्वानों को, नामांकित राजकार्य धुरंधरों को और सुप्रसिद्ध पंडितों को था, जिनके नाम यह हैं—

पंडित रामराव गोपाल ने नक्शे की,

सर्जन जनरल ए० एम० क्राफ्ट्स ने शारीरिक,

पंडित धर्मनारायण हकसर और
मिस्टर जे० डब्ल्यू० डी० जान्स्टन } ने उच्च अंग्रेजी,

बाबू पूरनचन्द्र और
कर्नल डी० जी० पिचर } ने सरवे और सेटिलमेन्ट और

सर डोनाल्ड राबर्टसन ने राज-कार्य तथा न्याय-विभाग की शिक्षा दी।

इस पूर्व और पाश्चिम के अनुपम शिक्षण से तथा आंग्ल पंडितों के उत्कृष्ट ज्ञान और वार्तालाप से आपको केवल देशीय

और विदेशीय आचार-विचार एवं रहन-सहन का ही पूर्ण ज्ञान नहीं हुआ, वरन् इससे भी उच्चतर लाभ यह हुआ कि भविष्य में राज्यशासन, प्रजापालन, राज्योपयोगी नीति और समयसूचकता के विचित्र और विलक्षण ज्ञान का उत्तम प्रकार से दिग्दर्शन हो गया।

महाराज की शिक्षा यहीं समाप्त नहीं हुई, किन्तु सैनिक शिक्षा भी आपको बाल्यावस्था से ही दी जाने लगी, जो राजाओं के लिये अत्यावश्यक है।

इसके लिये आपकी दूरदर्शी और पूर्ण अनुभवी मातेश्वरी ने, जिनकी स्वयं सैनिक शिक्षा में अत्यन्त अभिरुचि थी, युद्ध-विद्या-विशारद निम्न लिखित योग्य पुरुषों की नियुक्ति की:—

भैया साहब आपटे और
विट्ठलराव पालवे } ने घोड़े की सवारी,

कर्नल उल्फतसिंह और
जनरल अब्दुलगनी } ने फौज और रिसाले की, और

सरदार सर कृष्णराव बापू साहब जाधव,
मदारुल मुहाम, के. सी. आई. ई. } ने बन्दूक

चलाने की शिक्षा दी।

महाराज का ज्ञान-भंडार विद्वान् शिक्षकों की सहायता और उनकी योग्यता से दिनों दिन बढ़ने लगा। आपको अनेक विषयों का ज्ञान इस भले प्रकार से कराया गया था कि थोड़े ही समय

में आप कठिन से कठिन प्रश्नों और जटिल समस्याओं को बहुत शीघ्र हल करने लगे, जिससे विद्वान् लोग चकित और चमत्कृत हो जाते थे। माधव महाराज की योग्यता और अनेक विषयों की विज्ञता का पूर्ण परिचय उनकी लिखी हुई उन कापियों से भली भाँति हो सकता है जो आज भी सुरक्षित रूप से विक्टोरिया कॉलेज की लायब्रेरी में रखी हुई हैं। अनेक विषयों में से आपके मनोरंजक विषय भौतिक विज्ञान (Physics) और रसायन शास्त्र (Chemistry) थे। आपकी असाधारण और तीव्र बुद्धि पर लक्ष्य देकर स्वयं मिस्टर जान्स्टन ने एक स्थान पर आपके सम्बन्ध में इस प्रकार के उद्गार प्रकट किये थे—"बाल्यावस्था में ही माधवराव सेंधिया ने बड़ी प्रतिभा और विलक्षण बुद्धि का परिचय दिया है। जब राज्य का कार्य उनके आधीन किया जायगा तो वे बहुत शीघ्र राज्य-प्रबन्ध के प्रत्येक अंग को समझ कर उसको उन्नत अवस्था पर पहुँचा देंगे।"

बाल्यावस्था में ही प्रत्येक विषय में अलौकिक ज्ञान संपादन करने की आपकी रुचि देख कर भारत के वाइसराय श्रीमान् लार्ड लैन्सडाउन ने आपकी योग्यता पर अत्यन्त मुग्ध होकर इस प्रकार उल्लेख किया था—"जो उन्नति श्रीमान् शिक्षा के द्वारा अब तक कर चुके हैं और श्रीमान् के परिचित जनों की उनके प्रति जो सहानुभूति हो गई है, उससे आशा होती है कि जब श्रीमान् को शासन करने का अवसर प्राप्त होगा तब भारत के सब से प्रसिद्ध राजा-महाराजाओं में श्रीमान् का स्थान वास्तव में बहुत ऊंचा रहेगा।"

बालक महाराज की बाल्यावस्था में ही उनके शुद्ध अन्तःकरण पर योग्य, दूरदर्शी और बुद्धिमान् शिक्षकों के द्वारा इस प्रकार के अटल सिद्धान्त अंकित करा दिये गये थे कि प्रजा को सुख-संपत्तिशाली बनाने से, उनके कार्य में योग देने से, उनके सुख में सुख और दुःख में दुःख मानने से ही राजाओं की भलाई, यश और प्रतिष्ठा होती है। जिस राज्य की प्रजा सुखी, गुणवान्, व्यवसाय में कुशल, परिश्रमी, धार्मिक तथा सदाचारी होती है, वह राज्य सर्वदा संपत्तिशाली बना रहता है। प्रजा को धार्मिक बनाना, उसको धर्म और नीति की शिक्षा दिलाना, विद्यादान देना, उसके हितार्थ कला-कौशल का सुभीता करके उसको विद्वान् बनाना, अपने संपूर्ण राज्य में स्थान स्थान पर विद्या के केन्द्र स्थापित करके प्रजा को सुशिक्षित बनाना, अच्छे अच्छे भवनों का निर्माण कराना तथा करना, कृषकों के हितार्थ ताल-कुओं की व्यवस्था करते हुए समय समय पर उनकी आर्थिक सहायता करना, उनके परिश्रम से उत्पन्न किये हुए अन्नादि को देश-देशान्तरों में भिजवाना तथा उनके लाभार्थ अनेक स्थानों से नाना प्रकार की वस्तुएँ मँगवा कर उनको सरलतापूर्वक प्राप्त कराने की व्यवस्था करना, प्रजा को निडर बनाना, चोर-लुटेरों और डाकुओं तथा हिंसक पशुओं से स्वयं उनकी, उनके धन और जन की रक्षा करना, प्रजा में संगठन का भाव जाग्रत कराना आदि प्रजा के हितार्थ अनेक साधन उत्पन्न करना राजा का परम धर्म है। अपने राज्य के नाना

प्रकार के कला-कौशल जाननेवालों का समय समय पर द्रव्य द्वारा सत्कार करना, उनको अनेक कलाओं में प्रवीण करते हुए कला-कौशल को जीवित रखने के हितार्थ प्रोत्साहन देना, विद्वानों का स्वागत तथा सत्कार करना, ज्ञानवानों का एवं द्रव्य का संग्रह करना, राज्य के रक्षणार्थ सैनिक-बल और धर्म-बल का संचय करना और शुभचिन्तकों की रक्षा करना तथा दुष्टों का दमन करना राजा का मुख्य और परम कर्तव्य है।

परम प्रतापी, दृढ़-निश्चयी, प्रजा-शुभचिन्तक, धर्म-रक्षक, नीतिज्ञ महाराज माधवराव सेंधिया ने उपर्युक्त कर्तव्यों का पालन इस बुद्धिमानी और विचित्रता से किया कि उसको स्मरण कर मनुष्य मात्र के अन्तःकरण में उनके प्रति सद्भाव उत्पन्न होता है और "धन्य धन्य" के शब्द नित्य प्रति निकलते हैं।

आपने उपर्युक्त महामंत्रों के सिद्ध करने में अपने शारीरिक सुख और विश्राम की तथा आहार विहार की तनिक भी परवाह न की, वरन् अनेक प्रकार के कष्ट तथा नाना प्रकार की शारीरिक और मानसिक व्यथाएँ सहन करते हुए अहर्निश १०-१० और १२-१२ घंटे काम करके, समय समय पर वर्षा ऋतु की अत्यन्त जल वृष्टि को तथा ग्रीष्म के प्रबल तेजस्वी सूर्य की प्रखर रश्मियों को सहन करते हुए शिवपुरी से ग्वा-लियर का ७२ मील का प्रवास करने पर भी तुक विश्राम न कर अपनी प्राण समान प्यारी प्रजा के हितार्थ काम आरंभ कर

इस परम राजयोगी ने केवल अपनी प्रजा को ही नहीं वरन् भारत के श्रेष्ठ ज्ञानवानों के अतिरिक्त पाश्चात्य जगत् के बड़े बड़े ज्ञानियों, विद्या-विशारदों, तत्व-वेत्ताओं और राजनीतिज्ञों को अपने अनेक अद्वितीय गुणों के प्रकाश से चमत्कृत करा दिया था। इतना ही नहीं किन्तु आपने अनेक वीरात्माओं के अन्तःकरण में भी आनन्द, प्रेम, सुनीति, सदाचार, स्वकर्तव्य पालन आदि अपूर्व गुणों का उद्भव करा दिया था।

माधव महाराज अपनी किशोरावस्था में नित्य-प्रति प्रातःकाल घोड़े पर सवार होकर अपने सहचरों को साथ लेकर वायु-सेवन को निकला करते थे और दिलकुशा मैदान में घुड़दौड़ किया करते थे। जब आपको घोड़े पर सवारी करना भले प्रकार से आ चुका था तब स्वयं अपने और अपने सहचरों और संरक्षक सवारों के लिए साफे के भीतर कुला बाँधने का नियम किया था। बाल महाराज कभी-कभी सज-धज के साथ अपने सहचरों के सहित नगर में भी निकला करते थे। सवारी निकलने की शुभ वार्ता सुन कर नर-नारी सभी बड़े उत्सुक भाव से निकल, गृहकार्यों को जहां का तहां छोड़ और अपने बाल-बच्चों को गोद में लेकर आपके शुभ-दर्शनों के हितार्थ मार्ग के समीप खड़े रह कर आपके शुभ और प्रिय-दर्शनों का लाभ उठाया करते थे। आपके विकसित और प्रफुल्लित मन, मन्द-मुसुकान, सुन्दर शरीर और अपूर्व नेत्रों की छबि निरख प्रजाजन सर्वदा आल्हादित होते थे और बाल स्वरूप प्रभु के मुखचन्द्र को प्रेमपूर्वक निहार कर आशीर्वाद दिया करते थे।

बाल महाराज अपने प्रातःकाल के वायु-सेवन के अनन्तर विद्याभ्यास में अपना समय व्यतीत करते थे, और भोजन के अनन्तर थोड़ा विश्राम कर पुनः विद्याभ्यास में संलग्न हो जाते थे। सायंकाल को अनेक शारीरिक परिश्रम के खेल खेला करते थे अथवा वायु-सेवन के लिए जाया करते थे। सप्ताह में निश्चित दिन आप प्रातःकाल सैनिक शिक्षा पाते थे।

इसके अतिरिक्त मृगया में भी, जो क्षत्रियों के लिये अनादि काल से अत्यावश्यक समझी गई है, आपकी बड़ी रुचि थी। इसकी शिक्षा आपको आपके मातामह जाधव साहब से मिली थी।

शिकार के सम्बन्ध में एक समय ऐसा संयोग उपस्थित हुआ कि उसके स्मरण से बाल महाराज के स्वजन-प्रेम की भक्ति की साक्षी होती है। आप अपने नाना जाधव साहब तथा अन्य सहचरों के साथ पास के जंगल में हिरन के शिकार के लिये पहुँचे। खेमे में पहुँच पोशाक बदल कर शिकार के लिए बन्दूक उठाई और सब के साथ बड़े उत्सुक भाव से चल दिये। निश्चित स्थान पर पहुँच कर बैठे ही थे कि अचानक एक हिरन सामने थोड़ी दूरी पर दृष्टिगत हुआ। आप तुरन्त उसको लक्ष्य कर गोली चलाना ही चाहते थे कि इतने में वह हिरन जाधव साहब की ओर, जो थोड़े ही अन्तर पर थे, पहुँच गया। उन्होंने तुरन्त हिरन पर गोली चलाई और वह गिर पड़ा।

इससे बाल महाराज कुछ उदास हो गये; क्योंकि वे स्वयं ही उसको मारनेवाले थे। बाल स्वभाव के कारण यह उदासीनता तुरन्त क्रोध के रूप में परिवर्तित हो गई। महाराज यकायक अपने स्थान से उठ खड़े हुए और खेमे को अकेले ही लौट आये। आपके शीघ्र लौट आने पर जाधव साहब सहित अन्य जन भी लौट कर अपने अपने डेरों में पहुँच गये। थोड़े समय तक आपने किसी से भी वार्तालाप नहीं किया। इससे चतुर सेवकों को शीघ्र ही बोध हो गया कि बाल महाराज क्रुद्ध हैं। यह वार्ता वृद्ध जाधव साहब को भी मालूम हो गई। अनुभवी जाधव साहब ने तुरन्त ही जान लिया कि मेरे हिरन पर गोली चलाने से महाराज अप्रसन्न हो गये हैं। आपने बाल महाराज के क्रोध के निवारणार्थ शीघ्र ही एक युक्ति विचार कर अपने सेवकों को चुपके से कुल हाल सुनाते हुए कहा कि तुम सब पर यह सूचित करदो कि जाधव साहब की तबियत रात से ही बिगड़ी हुई थी और इस समय जंगल से वापस आने पर अधिक बिगड़ गई है। इसके सिवाय कुछ दवा लाने और मुझे खिलाने का स्वाँग रचो। बात की बात में बड़ी घबराहट से अनेक जन जाधव साहब के डेरे से भीतर बाहर जाने-आने लगे।

भोजन का समय होने पर बाल महाराज से भोजन करने के लिए प्रार्थना की गई तो आपने क्रोध के कारण कह दिया कि हमको भूख नहीं है। यह बात भी शीघ्र सबको प्रकट हो गई कि महाराज ने भोजन नहीं किया और अधिक क्रोध में हैं।

थोड़े समय के उपरान्त लोगों के इधर से उधर निकलने पर बाल महाराज ने अपने एक वृद्ध सेवक से बड़ी उत्सुकता से प्रश्न किया कि ये लोग इधर उधर क्यों आते जाते हैं ? अनुभवी सेवक ने, जो बड़ी देर से इस उपयुक्त समय की प्रतीक्षा चातक के सदृश कर रहा था, बहुत ही आदरपूर्वक निवेदन किया कि सरकार, जाधव साहब अब पके पान के समान हो गये हैं। थोड़ी सी सरदी गरमी में उनकी तबियत बिगड़ जाया करती है। पिछली रात को उनकी तबियत कुछ ठीक नहीं थी; परन्तु सरकार के साथ शिकार को न जाना भी उन्होंने उचित नहीं समझा। वे बड़ी हिम्मत करके सबेरे चले ही गये थे; परन्तु वहाँ पहुँचने पर उनकी तबियत और भी बिगड़ गई। हाथ से भरी बन्दूक गिर पड़ी और अनायास उसके चल जाने से हिरन को भी गोली लग गई। शिकार से लौट आने पर तबियत कुछ अधिक बिगड़ गई है।

इन बातों ने महाराज के कोमल अंतःकरण पर स्वजन-प्रेम का अलौकिक भाव जाग्रत करा दिया। आपने तुरन्त वृद्ध नाना को, उनके डेरे में पहुँच कर, देखने की इच्छा प्रकट की। यह बात जाधव साहब को एक सेवक द्वारा मालूम हो गई थी, इससे वह स्वयं तथा अन्य उपस्थित जन सचेत हो गये। सरकार की सवारी आ रही है, यह जान कर डेरे के उपस्थित जन आपके अभिनन्दनार्थ उठ खड़े हुए और जाधव साहब ने अपने मुँह पर चादर डाल करवट बदल ली।

बाल महाराज ने खेमे में जाकर देखा कि उपस्थित जन अपने म्लान मुख से कभी मेरी ओर और कभी जाधव साहब की ओर निहार रहे हैं। आपने बड़े उदास भाव से सन्मुख खड़े हुए मनुष्य से पूछा कि नानाजी की तबियत कैसी है? बालक महाराज के शब्दों को पहचान जाधव साहब ने अपने मुँह पर से चादर हटा कर स्पष्ट परन्तु धीमे शब्दों में उत्तर दिया कि सरकार, अब मेरी तबियत कुछ ठीक है, और साथ ही महाराज से पूछा कि क्या श्रीमान् ने भोजन कर लिया? समय अधिक हो चुका है, यदि भोजन न किया हो तो आप शीघ्र भोजन करलें; क्योंकि आप भूख से व्याकुल हो रहे होंगे। दयालु महाराज ने सहज स्वभाव से उत्तर दिया कि नहीं; और पूछा कि आप कुछ भोजन करेंगे? सरकार के इन अन्तिम शब्दों को सुन कर उपस्थित जना में से एक ने कहा कि महाराज, इन्होंने तो कल रात से ही भोजन नहीं किया है। ये कुछ भोजन करलें तो इनमें शक्ति का संचार शीघ्र हो जायगा। सरकार के कहने से थोड़ा बहुत भोजन करें तो करें; हम तो बड़ी देर से आग्रह कर रहे हैं।

स्वजन-प्रेमी दयालु महाराज ने तुरन्त आज्ञा की कि हमारा भोजन यहीं लाया जाय। थोड़ी देर में भोजन आ गया और आपने वृद्ध नाना के मुँह में भोजन का ग्रास देने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। यह देख वृद्ध और अनुभवी जाधव साहब का जीर्ण, परन्तु सशक्त संपूर्ण शरीर अत्यन्त प्रेम के कारण गद्गद हो गया और नेत्रों से प्रेमाश्रुओं का प्रवाह होने लगा।

जाधव साहब ने तुरन्त अपने बिस्तर से उठ बाल महाराज को हृदय से लगाया और प्रेमपूर्वक अपनी गोद में बैठा लिया। दोनों भोजन करने लगे। वृद्ध नाना ने भोजन करते करते बड़े गंभीर परन्तु हास्यपूर्ण शब्दों में सरकार को कह सुनाया कि यह सब युक्ति बालक महाराज का क्रोध शान्त करने के लिए की गई थी। बालकपन के सरल स्वभाव के कारण महाराज को वृद्ध नाना साहब की यह युक्ति जानकर अत्यन्त उल्लास और आनन्द हुआ और कई दिनों तक इस युक्ति की स्मृति आपके मनोरंजन का विषय हो गई थी।

महाराज का इंजीनियरिंग विषय की ओर स्वाभाविक प्रेम अधिक था। आपके लिए बालकपन में खेलने के मुख्य अभिप्राय से एक छोटी रेल की व्यवस्था की गई थी। बालक महाराज के इस खेलवाड़ की रेल के लिए पहिले पहिल सख्याविलास पर एक मनोरंजक और राजसी ठाट से सुसज्जित स्टेशन स्थापित किया गया और दूसरा स्टेशन एलगिन क्लब पर निर्धारित कर तीसरा स्टेशन रेलवे स्टेशन के समीप और चौथा स्टेशन मुरार पर बनाया गया। आप इस छोटी रेल पर अपने सहचरों और इष्ट-मित्रों को बैठा कर स्वयं एंजिन चलाते थे। इस प्रकार आपने एंजिन सम्बन्धी संपूर्ण ज्ञान शीघ्र ही प्राप्त कर लिया। पश्चात् इस रेल के स्थान पर आपने जी० एल० रेलवे की योजना की, जिसका विस्तार आज राजधानी से उत्तर की ओर भिन्ड तक ५५ मील, पश्चिम की ओर श्योपुर तक

१०० मील और दक्षिण की ओर शिवपुरी तक ७२ मील तथा लश्कर से मुरार तक ७ मील है, और फिर भी उसे आगे विस्तृत करने की योजना हो रही है।

इस ग्वालियर लाइट रेलवे के विस्तार से राज्य के भिन्ड, तवरघार, श्योपुर और नरवर जिलों की प्रजा का व्यवसाय बहुत उन्नत दशा को प्राप्त हो गया है और लाखों रुपयों की आय स्थायी रूप से राज्य के कोश में होने लगी है।

इस जी० एल० रेल का श्रीगणेश महाराज साहब ने भारत के प्रसिद्ध वाइसराय लार्ड कर्जन के द्वारा सन् १८९९ ई० की दूसरी दिसम्बर को कराया था। लार्ड महोदय ने इस लाइन को खोलते समय श्रीमान् महाराज के इंजीनियरिंग सम्बन्धी ज्ञान की जो सराहना की थी उससे पाठकों को यह बात भली-भाँति मालूम हो जायगी कि बालक महाराज ने केवल १९ वर्ष की किशोर अवस्था में किस प्रकार अद्भुत उन्नति करके ज्ञानवानों को चकित कर दिया था। लार्ड महोदय ने अपने सारगर्भित भाषण में कहा था--

"मुझे महाराज माधवराव सेंधिया के कुछ दिनों के सहवास से भली प्रकार यह ज्ञात हो गया है कि श्रीमान् का रेलवे का ज्ञान, इस सम्बन्ध में मेरे ज्ञान से, कहीं अधिक बढ़ा हुआ है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि महाराज रेल को एक कुशल ड्राइवर के समान स्वयं चला लेते हैं। मुझे भास होता है कि मैं

एक ऐसे ज्ञानी और अनुभवी के समीप हूँ जो कदाचित् स्वयं मेरी त्रुटियों को भी भले प्रकार से जान ले।"

बालक प्रायः निडर और चौकन्ने, चंचल और खिलाड़ी हुआ ही करते हैं; परन्तु उनमें धैर्य नहीं होता। यह गुण आप में विलक्षण था। आप बालकपन में अत्यन्त कठिन ही नहीं वरन् जान-जोखिम के समय पर भी बड़े धीर, दृढ़-निश्चयी और अटल बने रहते थे। किशोरावस्था में आपकी धैर्य धारण करने की पराकाष्ठा का ज्ञान पाठकों को नीचे लिखे वृत्तान्त से हो जायगा।

ग्वालियर राजधानी में अनेक प्रेक्षणीय और सार्वजनिक उत्सवों में से एक उत्सव मोहर्रम का होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि राज्य की ओर से ताजिये के समय हजारों मनुष्यों को लगभग एक सप्ताह तक अच्छा भोजन कराने की प्रथा वर्षों से प्रचलित है। राज्य के अतिरिक्त अनेक नामांकित सरदारों के यहां भी ताजिये का उत्सव बड़े समारोह के साथ सानन्द मनाया जाता है।

प्रख्यात कंपू कोठी के ताजिये के सिवाय नरतबेले स्थान (प्रस्तुत छापेखाने) पर राज्य की ओर से उत्तम कौशल के साथ घोड़ा बनाकर रखने की पहले परिपाटी थी। यहां पर ९ बजे रात तक बड़ी सज-धज के साथ रोशनी की जाती थी। यह दृश्य भी समयानुसार प्रेक्षणीय था; परन्तु सहसा महाराज के चित्त में ये विचार जाग्रत हुए कि यहां पर एक छोटे से एंजिन को

रख यदि बिजली का प्रकाश किया जाय तो उससे घोड़े की बारीक और मनोहर कारीगरी का ज्ञान दर्शकों का विशेष मनोरंजन करेगा और उसके साथ-साथ प्रजा-जनों में भविष्य में इस कला की अधिक वृद्धि हो जायगी।

दूसरे दिन इस स्थान पर कुल व्यवस्था हो गई और बिलजी की रोशनी जगह जगह पर जगमगाने लगी। किस जगह प्रकाश न्यूनाधिक रखने से घोड़े की मनोहरता अत्यन्त चित्ताकर्षक हो जायगी, इस उद्देश्य से आप स्वयं इस कार्य में संलग्न हो गये, यहां तक कि आप धीरे-धीरे एंजिन के समीप पहुँच प्रकाश की गति को भी तीव्र करने लगे। अचानक आप की धोती का पल्ला एंजिन के पहिये में लिपट गया और आप उस ओर तुरन्त खिंचने लगे। ऐसे कठिन समय पर आपने शीघ्रता और साहस से अपने किशोरावस्था से विकसित शरीर का सम्पूर्ण झुकाव तुरन्त दूसरी ओर कर दिया। यह देख बात की बात में उपस्थित सरदार तथा अन्य अधिकारी लोग आप की ओर दौड़ पड़े और यकायक एंजिन के पहिये की गति को बन्द कर आप को एक ओर हटाकर विश्राम लेने के लिये निवेदन करने लगे। इस पर आपने सरल स्वभाव से बड़े गंभीर शब्दों में उत्तर दिया—मेरे यहां से एक ओर बैठ जाने में मेरी आश्रित और प्राण समान प्यारी प्रजा का आनन्द और मनोरंजन लुप्त हो जायगा।

महाराज का हृदयहारी चरित्र ऐसे अनेक मनोरंजक कार्यों से परिपूर्ण है। यदि उन समस्त का यहाँ उल्लेख किया जाय तो

एक स्वतन्त्र मनोरंजक ग्रन्थ ही बन जायगा; परन्तु उनका हमारे विषय से संबंध नहीं है। अस्तु—

जीजा महाराज ने, राज्याधिकार प्राप्त होने के पूर्व उनका विवाह तारीख २ जनवरी सन १८९१ ई० को श्रीमंत सरदार मोहिते साहब की एक मात्र सुशीला, स्वरूपवती और योग्य पुत्री से किशोरावस्था में कर दिया था। मातेश्वरी ने अपनी प्राणप्यारी पुत्र-वधु की शिक्षा की उत्तम व्यवस्था करते हुए स्वयं उनको नित्य-प्रति राज-घराने के आचार-विचार, व्यवहार, कुल-धर्म, रहन-सहन आदि बातों की बड़े लाड़-चाव से शिक्षा देकर महारानी चिनकू राजा सेंधिया को एक योग्य महारानी बना दिया।

अनुभवी जीजा महाराज अपनी पुत्र-वधु की सेवा-शुश्रूषा, वार्तालाप और धार्मिक जीवन से बहुत प्रसन्न रहती थीं। वे यह भी भले प्रकार से समझ चुकी थीं कि श्रीमती महारानी चिनकू राजा सरदारों और राजा-महाराजाओं के महलों में पहुँचने पर अपने गौरव को ऊंचा रख सकती हैं और रहन-सहन आदि बातों में भी भली-भाँति से योग्य और अनुभवी हो चुकी हैं। यह जानने के अनन्तर महारानी को अनेक सहचरियों और दासियों के साथ बड़े-बड़े महत्वपूर्ण स्त्री-समाज के उत्सवों में सम्मिलित होने की आज्ञा दी, जिससे महारानी ने स्त्रियों के सामाजिक जीवन का अच्छा अनुभव प्राप्त किया और उसका विवेचन भी आप बहुत उत्तम ढंग से करती थीं।

महाराज जब कभी अधिक दिनों के लिए राज्य से बाहर जाया करते थे, तब आप राज-कार्य का संपूर्ण भार सरदार रावराजा सर रघुनाथराव दिनकर राजवाड़े, सी० आई० ई०, मशीरे-खास बहादुर, मदारुल-मुहाम, को तथा अपनी पूज्य-माता को ही सौंप जाया करते थे। ऐसे अवसर पर जीजा महाराज राज-कार्य संपादन करने के साथ ही साथ महारानी को राजनैतिक तथा अन्य मार्मिक और महत्वपूर्ण विषयों की शिक्षा दिया करती थीं। आपने अपनी पुत्र-वधु को भी घोड़े की सवारी में, जिसमें वे स्वयं रुचि रखती थीं, अनुरक्त किया था।

शिक्षा समाप्त कर चुकने के पश्चात् युवा महाराज ने सैनिक विभाग, आय विभाग, लैन्ड रेकर्ड्स और न्याय विभाग के कार्य को एक सामान्य कर्मचारी से लेकर श्रेष्ठ पदाधिकारी तक अपने हाथों से संपादन किया और इस प्रकार प्रत्येक विषय की योग्यता प्राप्त कर चुकने पर सन् १८९४ ई० में वाइसराय लार्ड एलगिन के आदेशानुसार महक्मे कारखानेजात का कार्य-संपादन-भार आपके अधीन किया गया।

महक्मे कारखानेजात में मुख्यतर संपूर्ण महल सम्बन्धी कार्य अर्थात् आरायश कारखाना, खासगी कारखाना, शागिर्द पेशा, जानवरी कारखाना, बागात आदि सम्मिलित हैं, जिनमें सब प्रकार के सामान का समयानुसार संग्रह, उसकी देख-भाल करना, प्रत्येक सामान को स्वच्छ तथा उत्तम स्थिति में रखना और उपयुक्त स्थानों पर उसकी योजना करना, जीर्ण वस्तुओं

को प्रथक करके उनके स्थान पर दूसरी नवीन वस्तुओं का रखना, आये हुए अतिथियों के हितार्थ उनके मान तथा पद के अनुसार प्रत्येक वस्तु समय पर पहुँचाना, महलों और महल सम्बन्धी उद्यानों को स्वच्छतापूर्वक नाना प्रकार की मनोरंजक वस्तुओं से सुसज्जित करना और अनेक प्रकार के चित्र-विचित्र पुष्पों को तैयार कराना और उनका निरीक्षण करना, राज्य सम्बन्धी प्रत्येक उत्सव के हितार्थ मूल्यवान् वस्तुओं का प्राप्त करना, देवस्थानों और छत्रियों की तथा उनके सम्बन्धी पूजा-पाठ, नैवेद्य और भोजन की व्यवस्था करना, राज्य सम्बन्धी बड़े बड़े भोजों में काम आनेवाले बहुमूल्य सोने-चाँदी के बर्तनों का संग्रह करना, वहनशाला की व्यवस्था रखना, महलों में दास-दासी वर्ग के कार्य निर्धारित करना, उनके मर्यादानुसार वस्त्र-आभूषण की योजना करना, आदि नाना प्रकार के छोटे-बड़े कार्यों का आपने बड़े परिश्रम से और विचारपूर्वक प्रति दिन निरीक्षण किया। प्रत्येक वस्तु का, प्रत्येक के कार्य का और काम करने के समय का अत्यन्त विचारपूर्वक मनन करके स्थान स्थान पर परिवर्तन किया। प्रत्येक बात के नियम निर्धारित किये। निशि-दिन के विचारपूर्वक अनुभव से आपने प्रत्येक कार्यकर्ता के कार्य को इस उत्तम प्रकार से विभक्त किया कि जिस स्थान पर पूर्व में दो मनुष्यों को भी जो कार्य भार रूप मालूम होता था, थोड़े ही समय में एक ही मनुष्य उस कार्य को सानन्द संपादन करके यथेष्ट विश्राम भी करने लगा। यह व्यवस्था करने के पश्चात्

आपने आय-व्यय सम्बन्धी अनेक बातों में न्यूनाधिक व्यवस्था करके नित्य-प्रति हिसाब पर अपने हस्ताक्षर करने की प्रथा प्रचलित की। इस प्रकार आपने अगाध और गाढ़ परिश्रम करके इस महत्वपूर्ण कार्य का संपादन इस सुन्दरता से कर दिखलाया कि देखने और जाननेवालों को आश्चर्य ही नहीं हुआ, प्रत्युत् आपकी चमत्कृत और विलक्षण बुद्धि, कार्य संपादन की शैली, दूरदर्शिता तथा प्रबल प्रताप से संपूर्ण कारखानेजात के अधिकारी वर्ग, कर्मचारी, दास-दासी एवं संपूर्ण अन्य अधिकारी और राज-कर्मचारी आकर्षित हो गये।

बुद्धि-ज्ञान विकास काल में कौन्सिल ऑफ रीजेन्सी ने, जिसकी व्यवस्था आपके शैशव काल में ही हो चुकी थी, और रेसिडेन्ट कर्नल रावर्टसन ने युवक महाराज की अलौकिक शक्ति, तीव्र बुद्धि और कार्यकारिणी शैली पर पूर्ण विचार कर आपको संपूर्ण राज्याधिकार देने के अभिप्राय से भारत सरकार से विनीत निवेदन किया। तदनुसार सन् १८९४ ई० की १५ दिसम्बर को मध्य-भारत के एजेन्ट गवर्नर-जनरल सर डेविड बार ने आप को सर्व प्रकार के राज कार्य का भार देने के लिये एक वृहद् दरबार की योजना की और वाइसराय अर्ल ऑफ एलगिन के खरीतों को उस दरबार में पढ़कर युवक महाराज को राज्याधिकार सौंपे जाने की सहर्ष घोषणा की। पश्चात् मध्य-भारत के एजेन्ट गवर्नर-जनरल सर डेविड बार ने एक वक्तृता दी, जिसके अन्त में आपने कहा—

"मान्यवर वायसराय ने अपने खरीते में लिखा है कि महाराज साहब का राज्य-काल जिस समय प्रारंभ होता है, वह

समय शुभ, शकुनकारी और आशाजनक है। श्रीमान् भारतीय राजाओं में एक कीर्तिशाली राजवंश के अधिकारी हुए हैं। इस वंश की कीर्ति को श्रीमान् के पूज्य पिता ने सन् १८५७ ई० के विप्लव के संकट समय में इंग्लैण्ड के राज-सिंहासन के प्रति अपने प्रेम और भक्ति को प्रदर्शित कर और भी अधिक दृढ़ तथा विस्तृत किया था। श्रीमान् एक ऐसे राज्य के अधिकारी हुए हैं जिसका विस्तार तीस हजार वर्ग मील में है और प्रजा की संख्या बत्तीस लाख तथा आय डेढ़ करोड़ रुपये की है।

श्रीमान् की बाल्यावस्था के समय इस राज्य का प्रबन्ध भारत सरकार की देख भाल में ग्वालियर के सरदारों एवं अधिकारियों ने इस उत्तम प्रकार से संपादित किया है कि जिसके कारण आज श्रीमान् की प्रजा सुखी है और कोष परिपूर्ण है। श्रीमान् को उच्च अधिकारों के संपादन करने की शिक्षा प्राप्त हुई है और श्रीमान् इससे पूर्व ही अपनी योग्यता का और एक बुद्धिमान् शासक होने का अनेक बार प्रमाण दे चुके हैं।......इस शुभ अवसर पर जब कि श्रीमान् की बाल्यावस्था समाप्त होती है और श्रीमान् राज्याधिकार अपने कर कमलों में ग्रहण कर रहे हैं, मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि श्रीमान् इस राज्य का शासन इस प्रकार भली-भांति संपादन करें जिससे श्रीमान् के वंश और श्रीमान् के नाम की प्रतिष्ठा और मर्यादा स्थापित रहे और श्रीमान् के राज्य और उसके निवासियों को पूर्ण रूप से सुख, शान्ति और संवृद्धि प्राप्त हो।"

एजेन्ट गवर्नर-जनरल सर डेविड बार के भावपूर्ण भाषण के उत्तर में श्रीमान् युवक महाराज ने कहा था:—

"आपने पूर्ण कृपा करके इस अवसर पर मुझे जो बहुमूल्य उपदेश दिया है, वह मुझे उन कठिनाइयों से सानन्द पार होने में सहायक होगा जो आपत्तियां एक किशोर-वयस्क राज्याधिकारी को आरम्भ में झेलनी पड़ती हैं। यद्यपि सफलता प्राप्त करना मेरे अधिकार में नहीं है, तथापि मुझे इस बात की प्रतिज्ञा करने में तनिक भी संकोच नहीं है कि मैं सर्वदा सफलता प्राप्त करने के लिये गाढ़ परिश्रम और अनेक यत्न करता रहूँगा।"

ये वाक्य ग्वालियर राज्य के इतिहास में सुवर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य हैं। राज्याधिकार प्राप्त कर चुकने के अनन्तर श्रीमान् महाराज के आज तक के सम्पूर्ण कार्यों को सन्मुख रख प्रत्येक विचारशील और ज्ञानवान् मनुष्य न्याय-दृष्टि से भली-भाँति देख सकता है कि आपने अपने राजत्व-काल में अपने निज सुख और विश्राम को तृणवत् जान अपने राज्य को दृढ़ करने में, प्रजा-जनों को अनेक प्रकार के सुख पहुँचाने में, कृषकों के लाभार्थ करोड़ों रुपये राज-कोश से सतत व्यय करके उनको उन्नत और धनिक बनाने में, अपने वंशजों की कीर्ति चिर-स्थायी रखने में, अपने राज्याश्रित अनेक छोटे-छोटे पूर्व-कालिक राज्यों को पुनः भारत सरकार की कृपा संपादन कर फिर से हस्तगत करने में किस प्रकार अगाध परिश्रम और अनुपम सफलता प्राप्त की। इतना ही नहीं, प्रत्युत् आपने

मित्र-वत् भारत सरकार को पिछले महायुद्ध में धन-जन तथा नाना प्रकार की युद्ध संबन्धी अनेक अमूल्य वस्तुएँ भेंट कर अपने योग्य और विश्वासी होने की पराकाष्ठा दिखलाई।

महाराज सेंधिया का राज्य-प्रबन्ध

हम पहले कह चुके हैं कि श्रीमान् महाराज को आपकी पूज्य और दूरदर्शी मातेश्वरी ने, प्रसिद्ध और ज्ञानवान् शिक्षकों के द्वारा, आपकी किशोरावस्था के विकसित और शुद्ध अन्तःकरण में, इस बात का दृढ़ निश्चय और विश्वास करा दिया था कि राजा को—प्रत्येक राज्य संचालक समाज के नेता, कुटुम्ब के स्वामी, सेना के जनरल, विद्याभ्यासी, व्यवसायी तथा कृषकों को उनका ध्येय प्राप्त करने तथा अर्थ-सिद्धि में—अपने अविश्रान्त परिश्रम और उत्कृष्ट साधनों द्वारा सहायक होना चाहिये। इसके सिवा इसका गुह्य रहस्य और क्या हो सकता है ?

परिश्रम केवल आधिभौतिक ज्ञानार्जन का ही सहायक नहीं है, प्रत्युत् कला, साहित्य, विज्ञान आदि संसार को चमत्कृत करनेवाले जितने अद्वितीय कार्य, जो आज दृष्टिगोचर हो रहे हैं, वे सब परिश्रम पर ही अवलंबित हैं। परिश्रम एक अद्भुत जादू है, महा-मंत्र है। मोक्ष देनेवाला या परम-पद को पहुंचानेवाला उत्कृष्ट ज्ञान भी इसी परिश्रम पर निर्भर है। और इस परिश्रम को विचारपूर्वक सतत संपादन करने का ही नाम प्रतिभा है। इसमें

बड़े-बड़े महत्वपूर्ण कार्य करने की विचित्र शक्ति ओत-प्रोत भरी हुई है। जो लोग पवित्र कार्यों के हितार्थ बहुत ऊँचे उद्देश्य रख कर परिश्रम का अभ्यास करते हैं, उनके लिये यही देव-पूजा है, यही यजन है, यही कर्तव्य है, इसी में आत्म-गौरव और सन्मान है।

आज हमारे समक्ष इस असार संसार में हमारे प्राणप्रिय महाराज माधवराव नहीं रहे जो हमको कह सुनाते कि मैंने किन किन आपत्तियों को सहन कर इस परिश्रम रूपी महा-मंत्र की सिद्धि प्राप्त की थी। किस किस समय मैंने आहार, निद्रा और विश्राम को तिलांजलि देकर परिश्रम द्वारा हित-साधना की थी, कहाँ कहाँ चल-फिर कर मैंने अपने प्राणों के समान प्यारी प्रजा के लाभार्थ अच्छी अच्छी बातों को, नवीन और लाभदायक अनेक सिद्धान्तों को श्रवण और मनन करते हुए कार्य रूप में परिणित किया था, किन-किन महान् और योग्य पुरुषों से अपने राज्य और प्रजा के उत्थान के सम्बध में वार्तालाप किया था; परन्तु आज महाराज के अविश्रान्त परिश्रम द्वारा संपादित अनेक रोचक और मनोरंजक स्थान, सहस्त्रों शिक्षाप्रद भाषण, अनेक उपयुक्त उपदेशों से रचित पुस्तकें, प्रजा के लिये नाना प्रकार के आधुनिक तथा पूर्वकालिक विषयों के ज्ञान संपादनार्थ अनेक विद्यालय, न्यायालय और वाणिज्य के केन्द्रों से भली भाँति दृष्टिगत हो रहा है कि महाराज के उन्नति प्राप्त करने का एकमात्र गुह्य रहस्य परिश्रम ही था।

महाराज के इस अनुपम परिश्रम का प्रभाव उनकी आश्रित प्रजा पर ही नहीं पड़ा, केवल भारतवासियों को ही इस परिश्रम का भान नहीं हुआ, वरन् बड़े-बड़े दूरदर्शी, विचारशील, ज्ञानी और मानी पाश्चात्य निवासियों को भी अपने इस सतत परिश्रम द्वारा आपने अपना बना लिया था।

महाराज ने राज्याधिकार प्राप्त करने के पश्चात् पहले राज्य में परिभ्रमण करके भौगोलिक परिस्थिति का ज्ञान संपादन किया। सूबों, जिलों और तहसीलों के कार्य संपादन करने की शैली, प्रजा की आर्थिक स्थिति, भूमि की उर्वरा शक्ति, राज्य का प्रबन्ध, अधिकारियों और कर्मचारियों की योग्यता तथा व्यापार की उन्नति, प्रजा की राजभक्ति आदि संपूर्ण बातों का थोड़े ही समय में निरीक्षण कर लिया। दौरे के पश्चात् आपने निश्चित समय पर दफ्तर में पहुँच भिन्न-भिन्न विभागों की मिसलों तथा उनके संक्षेप से लिखे हुए नोटों को सूक्ष्म दृष्टि से पढ़ना और जाँचना आरंभ किया। यदि किसी जगह त्रुटि पाते तो तुरन्त उस विभाग के पदाधिकारी को अपने सन्मुख बुलाकर मधुर, गंभीर परन्तु तीक्ष्ण कटाक्ष करके उसको लज्जित कर दिया करते थे और मिसल में सही नोट पुनः लिखवा कर भेज देने का आदेश करते थे। कुछ दिनों तक इस तरह कार्य करने से आप के सूक्ष्म परन्तु यथार्थ विवेचन का प्रभाव संपूर्ण अधिकारियों एवं अहलकारों पर समान रूप से छा गया, जिससे संपूर्ण वर्ग के कर्मचारियों न तात्विक दृष्टि से कार्य-संपादन करना अपना ध्येय कर लिया था।

कभी-कभी आप किसी दफ्तर में अकेले जा निकलते थे और साधारण देख-भाल कर लौट जाया करते थे। यदि किसी समय कोई पदाधिकारी अपने स्थान पर आप को न मिलता और पूछ-ताछ करने पर यदि आपको यह भली-भाँति मालूम हो जाता कि वे अभी आये ही नहीं हैं, तो आप उनकी मेज पर कभी अपने हस्ताक्षर कर दिया करते अथवा कभी उनकी मेज पर की मिसलों की व्यवस्था को उलट-पुलट दिया करते थे; और जब उनको आपकी इस अपूर्व लीला का वृत्तान्त मालूम होता था तो वे बड़े लज्जित होते थे और आपके समीप पहुँचने में हिचकिचाते थे। आपके इस विचित्र और सत्तात्मक मनोरंजन ने प्रत्येक दफ्तर की स्थिति, कार्य-प्रणाली और कार्यकर्ताओं की रहन-सहन को उन्नत दशा में पहुँचा दिया था। इसके पश्चात् आपने दफ्तर सम्बन्धी काम करने के नियमों में विचारपूर्वक परिवर्तन किया। इन नियमों में से प्रथम नियम गाइड बुक का था, जो सन १८९९ ई० में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक को श्रीमान् की शासन-पद्धति की आधार-शिला कहना चाहिए।

आपने सन् १८९६ ई० में राज्य के भिन्न-भिन्न विभागों में सुधार करने का कार्य आरम्भ किया और सब से प्रथम माल और कागजातदेही का (जिन्हें यथाक्रम Revenue and Land Records कहते हैं) महत्वपूर्ण कार्य अपने हाथ में लिया और महकमा माल के कर्मचारियों के कार्य का नियमानुसार

निरीक्षण करने तथा मालगुजारी के अंगभूत कार्य के उचित प्रबन्ध के उद्देश्य से अपनी अध्यक्षता में रेवेन्यू बोर्ड का संगठन किया। इस बोर्ड के अधीन महकमा पोस्ट, पेन्शन, स्टाम्प, प्रेस और जंगलात विभाग रखे जाने की योजना की। इसी वर्ष हुजूर दरबार (सेक्रेटरियट) स्थापित किया। इस विभाग के कार्य का संपादन करने के लिये एक चीफ सेक्रेटरी, दो सेक्रेटरी और एक अन्डर सेक्रेटरी की योजना की। संपूर्ण विभागों के कार्य को इसी विभाग के द्वारा अपने पास पहुँचाने की पद्धति प्रचलित की। इसके पश्चात् ग्वालियर और ईसागढ़ प्रान्तों का कार्य सुगमतापूर्वक संपादन करने के लिये दो नवीन पद सर सूबाओं के बनाये और परगनों की व्यवस्था में थोड़ा बहुत परिवर्तन किया।

प्रजा का अधिक कष्ट न सह सकने के कारण, शीघ्र न्याय मिलने के अभिप्राय से सूबों, मजिस्ट्रेटों तथा पुलिस के अधिकार में वृद्धि करते हुए मजिस्ट्रेट और पुलिस को सूबों का सहायक नियत किया और पुलिस विभाग में किंचित् परिवर्तन करते हुए नये नियमों की योजना की। इसी वर्ष प्रत्येक जिले के परचा-नवीसों का पद कम किया गया था।

सन् १८९६-९७ ई० में सामयिक वर्षा न होने के कारण संपूर्ण ग्वालियर प्रान्त में दुष्काल आरंभ हो गया। इसी आपद् काल में आपने अपनी आश्रित प्रजा के दुःख निवारणार्थ अनेक स्थानों पर दुष्काल पीड़ितों के लिये अन्न और जल की व्यवस्था

का तथा राज्य में अन्न-वस्त्र एक जगह से दूसरी जगह सुगमता से पहुँचाने के लिये ग्वालियर से भिन्ड तक तथा ग्वालियर से शिवपुरी तक छोटी लाइन जी० एल० रेलवे का निर्माण किया। इस प्रकार लाखों रुपये खर्च करके अपनी पीड़ित प्रजा के प्राणों की रक्षा की। आपने इसी वर्ष अर्थात् २२ जून सन् १८९७ ई० को जगत् प्रख्यात श्रीमती महारानी विक्टोरिया की डायमंड जुबली के शुभ अवसर पर अपनी अकाल-पीड़ित प्रजा के कृषि-कर में ६० लाख रुपयों की माफी प्रदान की और कारावास के अनेक मनुष्यों को मुक्त करके अपनी दया का परिचय दिया था।

इतिहास आज इस बात की साक्षी दे रहा है कि जो उच्च आत्माएँ अपने अलौकिक गुणों से युक्त हो कर अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करती हैं, उनके समक्ष एक के पश्चात् दूसरी आपत्ति उपस्थित हो कर उनको सिद्धान्त से गिराने की चेष्टा करती है। उनके अलौकिक ध्येय-सिद्धि में नाना प्रकार की बाधाएँ आकर उपस्थित हो जाती हैं। परन्तु जो धीर, गंभीर, दृढ़-निश्चयी महानुभाव अपने मनोगत भावों पर परोपकार के लिये अटल बने रहते हैं वे अन्त में यशस्वी होते हुए ही पाये जाते हैं। इन्हीं महापुरुषों की गणना में हमारे चरित्र-नायक महाराज हैं, जिनके हृदयगत यह भाव थे कि मेरे शासन से संपूर्ण प्रजा सुखी और संपत्तिशाली बने और अपने व्यवसाय में सुचारु रूप से उन्नति करे। कृषक समुदाय अपने
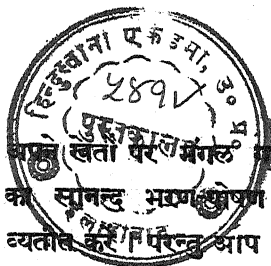
अपने खेतों पर मंगल गान करते हुए, अपना और अपने कुटुम्ब का सानन्द भरण-पोषण करते हुए आनन्दपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करें। परन्तु आप के युवाकाल की उमंग से विकसित इस ध्येय-रूपी कमल को सन् १८९९-१९०० ई० के महादुष्काल ने पुनः यकायक कुम्हला दिया। इस भयंकर अकाल ने इस बार अपना अधिकार संपूर्ण ग्वालियर राज्य की प्रजा पर जमा लिया था। इस कठिन प्रकोप के निवारणार्थ और अपने दया-भाव को चिरस्थायी रखने के लिये, आपने अपने राज्य में जगह जगह पीड़ित प्रजा और उनके पशुओं के लाभार्थ अनेक अन्न-सत्र, जलाशय और तृण की बहुत शीघ्र उत्तम व्यवस्था कर दी। इस बार संपूर्ण व्यवस्था के निरीक्षण का भार अपने हाथ में लिया था। ऐसे कठिन समय पर आपने अपनी प्रजा के लिये ही अटूट धन व्यय नहीं किया, वरन् ग्वालियर राज्य के निकटवर्तीय अनेक राज्यों को भी ऋण रूप से द्रव्य देकर उनकी सहायता कर अपनी दयालुता का परिचय दिया था।

आप की इस सर्वव्यापी दया से प्रसन्न होकर भारत सरकार ने आप को "कैसर-हिन्द" स्वर्ण-पदक से भूषित कर सन्मानित किया था।

इसी वर्ष दक्षिण अफ्रिका में बोअर लोगों के साथ ब्रिटिश सरकार से युद्ध छिड़ गया था। इस अवसर पर भी आपने अपने सौजन्य का परिचय भारत सरकार को तोपखाने के ३९९ घोड़े भेंट करके दिया था। और इसी वर्ष चीन में ब्रिटिश

सरकार के साथ युद्ध छिड़ जाने पर युद्ध-पीड़ितों के लिये आपने दयापूर्वक २० लाख रुपये की लागत का एक अस्पताली जहाज भारत सरकार को भेंट किया, जिसका नाम "ग्वालियर" रखा गया था।

साहसी वीरों का सर्वदा यह लक्ष्य रहता है कि अवसर पर अपने वीरत्व का परिचय दें। इसी सिद्धान्तानुसार इस समय आप का तरुण अवस्था रूपी सूर्य प्रकाशित होकर युद्ध-कौशल दिखलाने के लिये आपको उत्तेजित कर रहा था। इस कारण आपने भारत सरकार से स्वयं युद्ध-स्थल पर पहुँचने की आज्ञा चाही और उसने आपके इच्छानुसार आज्ञा प्रदान की। आपने चीन के लिये तारीख २७ जौलाई सन् १९०० ई० को अपने ग्वालियर नामक जहाज से प्रयाण किया।

महाराज ने युद्ध-स्थल पर बड़ी योग्यता से अपनी वीरता का परिचय दिया और चीन युद्ध समाप्त हो जाने पर आप तारीख १६ दिसम्बर सन् १९०० ई० को अपनी राजधानी में वापस आये। आपके इस अनोखे साहस पर मुग्ध होकर श्रीमती महारानी विक्टोरिया ने आपको धन्यवाद का तार भेजकर सन्मानित किया। आपने युवावस्था में भारत सरकार को जो शारीरिक, मानसिक और आर्थिक सहायता दी थी उसकी प्रशंसा अनेक बार श्रीमती ने पार्लिमेन्ट में की थी और इस सहायता के उपलक्ष में आपको सम्राट महोदय के ए०-डी०-सी० होने का गौरव प्राप्त हुआ था।

श्रीमती महारानी विक्टोरिया के स्वर्गवास के पश्चात् श्रीमान् सम्राट एडवर्ड के सिंहासनारोहण के दरबार में तारीख २६ जून सन् १९०१ ई० को उपस्थित होने के लिये आप निमंत्रित किये गये थे। तदनुसार आप अपनी राजधानी से तारीख ९ मई सन् १९०१ ई० को इंग्लैण्ड के लिये पधारे और वहाँ पहुँच कर आप श्रीमान् सम्राट के अतिथि हुए। चीन की सहायता के उपलक्ष में सम्राट महोदय ने अपने कर-कमलों से आपको एक पदक अर्पण किया; और इसी अवसर पर केम्ब्रिज विद्यापीठ की ओर से आप एल० एल० डा० की पदवी से भूषित किये गये थे। इंग्लैण्ड में रायल एशियाटिक सोसायटी के भोज के समय आपने एक भावपूर्ण भाषण दिया था, जिसका वहाँ की जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा था। इस अवसर पर रोगियों के लिये अस्पताली फंड में आपने डेढ़ लाख रुपये प्रदान कर के अपनी दया का परिचय दिया था, जिसके कारण इंग्लैण्ड में आपकी कीर्ति-कौमुदी और भी उज्ज्वल हो गई थी। आप वहां से तारीख १ सितम्बर सन् १९०१ ई० को ग्वालियर के लिये वापस पधारे थे।

सन् १९०३ ई० के जनवरी मास में आप अपनी राजधानी में श्रीमान् ड्यूक ऑफ कनाट के द्वारा जी० सी० वी० ओ० की पदवी से आभूषित किये गये थे। इसी अवसर पर महारानी विक्टोरिया की स्मृति में विक्टोरिया कॉलेज की आधार-शिला रखवाई गई थी।

रेवेन्यू बोर्ड के अनन्तर इन सात वर्षों में रेवेन्यू के कार्य में आप को अपने ध्येय के अनुसार संतोष न होने के कारण आपने पुनः इसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया, पुलिस विभाग को प्रथक स्थापित कर बोर्ड के अधीनस्थ विभागों में फेर-फार किया तथा राज्य के आय-व्यय के वार्षिक हिसाब के लिये पहली जौलाई से वर्ष नियत कर दिया।

पहले राज-कार्य अनेक भाषाओं में अर्थात् कहीं मरहठी में, कहीं उर्दू और फारसी में, कहीं हिन्दी और अंग्रेजी में संपादित किया जाता था; पर जब से आपने राज्य-शासन का भार अपने हाथ में लिया तब से आप इस बात पर पूर्ण विचार कर रहे थे कि किस भाषा को राज-कार्य में प्रचलित किया जाय, जिसके समझने में यहाँ सब को सुगमता हो, जो राष्ट्र-भाषा हो, जिससे देश-भक्ति, जातीय-चिन्ह, अपना धर्म और नीति-रीति चिर-स्थायी बनी रह सके।

महाराज के भाषा-सम्बन्धी विचार बड़े ही अपूर्व और भावपूर्ण थे, जो प्रत्येक देशाभिमानी और धर्माभिमानी के मन में आपके प्रति सद्भाव जाग्रत करा देते हैं। आपके भाषा-सम्बन्धी मनोगत भावों में कितना अपूर्व रहस्य, कैसा माधुर्य और कितनी विचित्रता ओत-प्रोत भरी हुई है, वह पढ़ने और मनन करने से ही सम्बन्ध रखती है। हम अपने प्रिय पाठकों के लिये आपके शब्दों को ज्यों का त्यों नीचे लिखे देते हैं—

"एडमिनिस्ट्रेशन में उसी जबान को तरजीह देना चाहिए जो उस मुल्क की हो; मस्लन्—जहाँ मुल्क की अंग्रेजी जबान

हो वहाँ अंग्रेजी, जहाँ हिन्दी हो वहाँ हिन्दी रखना चाहिये; वर्ना खौफ है कि आयन्दा चल कर जमाने में मुल्क की जबान लापता न हो जाय; क्योंकि आजकल हिन्दुस्थानियों की यह हालत है कि वे सिवाय अंग्रेजी बोलने के और कोई बात पसन्द नहीं करते। मालूम रहे कि जिस शख्स को अपनी नेशनेलिटी, अपने मजहब, अपने रस्मो-रिवाज और अपनी जबान पर नाज न हो तो वह इन्सान ही क्या। मेरा मक़सद हरगिज यह नहीं है कि जबान अँग्रेजी कोई सीखे ही नहीं; बल्कि मेरी ख्वाहिश तो यह है कि जहां तक हो सके, इन्सान को हर जबान सीखना चाहिये; मस्लन—हिन्दी, उर्दू, मराठी, अंग्रेजी, फ्रेंच, फारसी, अरबी, संस्कृत वगैर: वगैर:। लेकिन इनका इस्तमाल मौके पर करना चाहिये; मस्लन–जब हिन्दुस्थानी लोगों में बैठे तो हिन्दी में बातचीत करे, मरहठों में बैठे तो मरहठी में; लेकिन आजकाल हालत यह हो रही है कि कोई बात करे हिन्दी में तो जवाब मिलता है अंग्रेजी में। इसके मानी क्या? बैठे हैं मरहठों में और बोलते हैं अंग्रेजी। क्या साहब लोग जो उर्दू या मरहठी या फ्रेंच जानते हैं वह ऐसा करते हैं? हरगिज नहीं। अगर दूसरी जबान जानते भी हैं तो कभी वह अपने आपस में सिवाय अंग्रेजी के कोई दूसरी जबान नहीं बोलते। क्या वजह है कि हिन्दुस्थान के लोग इस तर्ज को इख्तियार न करें? मैंने अक्सर देखा है कि जो हिन्दुस्थानी अंग्रेजी जानते हैं उनसे अगर मैंने उर्दू में बात की तो उन्होंने उमूमन अंग्रेजी में जवाब दिया।

बाज औकात तो मुझे यह कहना पड़ा कि भाई, अपनी जबान में क्यों नहीं बोलते। क्या आबरू में फर्क आ जावेगा? इधर पढ़े-लिखों की यह हालत है कि अगर हिन्दुस्थानी बोलते हैं तो वह भी एक अजीब तर्ज की होती है; मस्लन दो साहब मिले तो पहले हाथ मिलायेंगे, बजाय एक दूसरे को सलाम दुआ करने के या नमस्कार करने के। अगर सलाम को हाथ उठावेंगे तो उलटा हाथ; अगर सीधा हाथ उठाया तो वह भी सेल्यूट की तरह। अगर बात करेंगे तो ऐसी कि हम कल जायगा, तुम इधर आओ, देखो जी तुम हमारा मानता नहीं है, हम लोग देगा......आखिर को यह बात क्या है?"

भाषा सम्बन्धी इस मुख्य विषय पर आपने हिन्दी भाषा के उत्तम गुणों को समझ अर्थात् राज-कार्य में सुगमता, भाषा की शुद्धा-शुद्ध लेखनशैली, भाषा की पहिचान और हिन्दी भाषा को सब प्रकार से योग्य जान कर तारीख १९ सितम्बर सन् १९१९ ई० को यह घोषित कर दिया कि हिन्दी भाषा ही राज-भाषा समझी जाय।

राज्याधिकार-प्राप्ति के पश्चात् नौ वर्षों के अथक परिश्रम से आपको अपने राज्य में कई प्रकार की उन्नति दृष्टिगत होने लगी। फिर आपने व्यापार और वाणिज्य का महत्वपूर्ण प्रश्न हाथ में लिया और इसके कार्य संचालनार्थ सेक्रेटरियट विभाग में एक योग्य अधिकारी की नियुक्ति की। इसके अतिरिक्त आपने पूर्व-कालिक खजाने की कार्य-प्रणाली और हिसाब-किताब रखने

की पद्धति में सुधार करने के मुख्य उद्देश्य से एक कमेटी का संगठन किया। इस कमेटी ने हिसाब-किताब रखने के नियम निर्धारित्ति किये, जो अकाउन्ट मैन्युअल के नाम से प्रसिद्ध हैं। पश्चात् अकाउन्टन्ट-जनरल के दफ्तर का सुधार कर के संपूर्ण राज्य के खजानों का सम्बन्ध इसी महकमे के अधिकार में रखा गया और कुल राज्य के प्रथक प्रथक खजानों को एकत्र कर के लश्कर में सेन्ट्रल ट्रेजरी की स्थापना की।

सन् १९०५ ई० में इंजीनियरिंग विभाग में आबपाशी के दफ्तर को प्रथक कर के एक सुपरिन्टेन्डिंग इंजीनियर के अधिकार में रखा और राज्य में कृषकों के हितार्थ आबपाशी के लिये सर्वे का कार्य अनेक स्थानों पर आरंभ किया। और सन् १९०६ ई० में कॉमर्स और इन्डस्ट्री बोर्ड की योजना की। इसी वर्ष आपने दरबार को राज्य सम्बंधी कार्यों में सहायता देने के लिये मजलिस खास की स्थापना की। इसका यह उद्देश्य था कि यह संघ कानूनी मुआम्लों में सहायता दे और व्यापार की उन्नति के लिये उचित साधनों द्वारा प्रयत्न करे। सन् १९०९ ई० में बोर्ड ऑफ रेवेन्यू और कॉमर्स एन्ड इन्डस्ट्री का पुनः संगठन किया और सन् १९१२ ई० में प्रजा की ओर से इस बोर्ड में दो प्रतिनिधि और मिलाये गये।

महाराज अपने शासन काल में ग्वालियर राज्य को एक आदर्श राज्य बनाने में सदा तल्लीन रहते थे। आपने राज्य और समाज सम्बंधी अनेक उचित नियम बनाकर अपनी प्रजा को

उनके अनुकूल व्यवहार करने की आज्ञा दी। सामाजिक नियमों में से एक नियम मराठा जाति (स्वजाति) के लिये आपने यह निर्धारित किया था कि पुत्रों और पुत्रियों का विवाह उनके माता पिता क्रमशः १८ और १९ वर्ष की अवस्था होने पर किया करें और बिना विशेष कारण के दूसरा विवाह कदापि न किया जाय। इस नियम के विपरीत चलने वाले गृहस्थ को सामाजिक दंड दिया जायगा।

संसार में जननी अर्थात् माता को यदि साक्षात् देवी की उपमा दी जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। कारण यह कि जिस प्रकार देवी अपने भक्त की नित्य-प्रति अनेक संकटों से रक्षा करती हुई सदा उसका कल्याण करती रहती है, उसी प्रकार माता भी अपने पुत्र को सर्वदा सुखी, संपत्तिशाली, भाग्यवान्, निरोग और पुत्रवान् देखने की चिन्ता करती रहती है।

आज महाराज का पहिला विवाह हुए २२ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं; किन्तु अभी तक वे संतान-सुख से वंचित रहे। अनेक प्रकार के दान, धर्म, जप, तप और नाना प्रकार के उपचार आदि भी किये गये; पर सब निष्फल हुए। अन्त में वृद्ध जीजा महाराज ने जान लिया कि (मेरी प्यारी पुत्र-वधु) चिनकू राजा सोंधिया को संतान-सुख नहीं बदा है। तब आपने पहले अपनी पुत्रिवत् महारानी को प्रेमपूर्वक अनेक प्रकार से समझा-बुझा कर महाराज के दूसरा विवाह करने की अनुमति ले ली। तत्पश्चात् आपने उपयुक्त समय पर महाराज को बड़े प्रेम से समझा कर दूसरा विवाह करने का अनुरोध किया।

महाराज विचार-सागर में गोते लगाने लगे। आप ने भी सोचा कि यदि मैं दूसरा विवाह नहीं करता हूँ तो संतान-सुख की प्राप्ति असंभव है। निदान आपने विद्वान् ब्राह्मणों, सरदारों, दरबारियों और अपने समाज के वयोवृद्धों तथा जागीरदारों को एकत्र करके अपनी पूज्य-माता का हार्दिक अभिप्राय और अपनी परिस्थिति का पूर्ण रीति से बोध कराते हुए कहा कि आप लोग इस जटिल प्रश्न को हल करके उचित परामर्श दें। उपस्थित विद्वद्वृन्द ने सेंधिया वंश सर्वदा हरा-भरा बना रहने की कामना से और इस उद्देश्य से कि ग्वालियर की राजगद्दी को भविष्य में पुनः अनौरस पुत्र से सुशोभित न करना पड़े तथा महारानी श्रीमती चिनकू राजा और प्राण-प्यारे महाराज पुत्र-रत्न के अलौकिक सुख का अनुभव करें, सहर्ष उल्लसित और सच्चे अन्तःकरण से महाराज को दूसरा विवाह करने की अनुमति दे दी।

प्रजा-वत्सल महाराज ने इस अनुमति के अनुसार सांखली निवासी श्रीमान् मामा साहब राणे सर देसाई की रूपवती, गुणज्ञ और भाग्यवती पुत्री का तारीख ८ मई सन् १९१३ ई० को पाणिग्रहण किया। परमात्मा की असीम कृपा से श्रीमती जीजा महाराज और सौभाग्यवती महारानी चिनकू राजा की निशिदिन की शुभ-कामना से, दान-धर्म से, प्रख्यात् साधु महात्माओं और राज्य के शुभ-चिन्तकों के हार्दिक आशीर्वाद से छोटी महारानी श्रीमती गजरा राजा सेंधिया की कोख से

तारीख १४ नवम्बर सन् १९१४ ई० को पहले पहल कन्या-रत्न उत्पन्न हुआ, जो श्रीमती मेरी कमला राजा के नाम से प्रख्यात् हुई; और उसके दो वर्ष पश्चात् अर्थात् सन् १९१६ ई० की २६ जून को ग्वालियर राज्य की ३२ लाख प्रजा को, राज्य की अतुल संपत्ति को, सेंधिया वंश की वीर-श्री को, महाराज माधवराव की बड़े परिश्रम से स्थापित की हुई कीर्ति को सतत स्थायी रखने वाली एक दिव्य-आत्मा का पुत्र रूप से जन्म हुआ, जो जॉर्ज जीवाजीराव सेंधिया के नाम से प्रख्यात् हुए।

श्रेष्ठ पुरुषों का सर्वदा यह सिद्धान्त रहता है कि जब तक कोई कार्य पूर्ण उन्नत अवस्था को न पहुँच जाय तब तक उसको उन्नत बनाने का प्रयत्न करते जाना ही मनुष्यत्व का मुख्य लक्षण है। ये ही विचार आप में भी पूर्ण रूप से जाग्रत रहा करते थे। आपने एक स्थान पर लिखा है--

"जब किसी काम के सिलसिले में या बवक्त इन्सपेक्शन या किसी और जरिये से अबतरी की बातें एक ऐसे शख्स की नजर में आती हैं जो काम करन वाला हो तो उसको एक किस्म की परेशानी और पस्तहिम्मती सी हो जाती है; और यह खयाल उसके दिल में पैदा होने लगता है कि मैं इतनी दिमाग़सोजी करता हूँ लेकिन फिर भी खामियाँ नजर में आती हैं। यह एक कुदरती बात है और काम करनेवाले के दिल में जरूर मायूसी पैदा करने वाली है। लेकिन ऐसी सूरत में परेशान और पस्तहिम्मत होकर बैठे रहने से काम नहीं चलता; बल्कि

ऐसी सूरत में इस मकूले पर अमल करके "हिम्मते मर्दां मदद खुदा" दुरुस्ती की कोशिश, गाफिलों को होशियार और सोतों को जगाते रहना चाहिये।"

इसी उद्देश्य को सन्मुख रख कर आपने अपने अगाध परिश्रम से राज्य सम्बन्धी अनेक अनुभव प्राप्त कर राज-कार्य संपादन के लिये सन् १९१४ ई० में निम्नालिखित श्रेष्ठ पदों की योजना की:—

१. पोलिटिकल मेम्बर।
२, आर्मी मेम्बर।
३. होम मेम्बर।
४. रेवेन्यू मेम्बर।
५. फायनेन्स मेम्बर।
६. मेम्बर फॉर लॉ एन्ड जस्टिस।
७. मम्बर फॉर अपील्स।
८. मेम्बर फॉर ट्रेड, कस्टम्स एन्ड एक्साइज।
९. मेम्बर फॉर एज्युकेशन एन्ड म्युनिसिपेलिटीज।
१०. मेम्बर फॉर एग्रीकलचर।*

इन उपर्युक्त दफ्तरों के कार्य में आपने अविश्रान्त परिश्रम करके जो कुछ उन्नति की है वह इस प्रकार से है:—

(१) राजनैतिक (पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट)—

इस दफ्तर को अलग स्थापित करके केवल राजनैतिक कार्या को इसके अधीन रखा है। अनेक महत्वपूर्ण कार्यों के

* इस पद की योजना आपने बाद में की थी।

साथ-साथ आपने मध्य भारत के संपूर्ण और भारत के बड़े-बड़े राज्यों से पत्र-व्यवहार करके परस्पर अपराधियों के लेने और देने की उत्तम व्यवस्था कराई है।

(२) सेना (आर्मी डिपार्टमेन्ट)—

इस विभाग की स्थापना आधुनिक उन्नत नियमों से की है। आप अपनी सेना के बड़े से बड़े पदाधिकारी से लेकर एक साधारण सैनिक तक के साथ कुटुम्बी के समान लाड़, चाव और प्रेम करते थे। सेंधिया की सेना सैनिक-कला में कितनी कुशल है, इसकी साक्षी उन अनेक भाषणों से भली-भाँति मिल सकती है जो सम्राट् महोदय ने, प्रिन्स ऑफ वेल्स ने और भारत सरकार के बड़े-बड़े पदाधिकारियों ने समय समय पर दिये हैं।

(३) होम—

जिस प्रकार अनेक साधनों के द्वारा अपनी प्रजा के कल्याण के लिये अगाध परिश्रम कर आपने सुव्यवस्था की थी, उसी प्रकार अपने आश्रित सरदारों, जागीरदारों और माफदारों की तथा उनकी आश्रित प्रजा की सर्वांगपूर्ण उन्नति और उत्थान करने की व्यवस्था का भार इस विभाग को सौंपा था।

अपने सरदारों, जागीरदारों और माफीदारों को नाना प्रकार के उपदेश देकर अपने अपने कार्य में उन्नति करते रहने के लिये आप समय समय पर संबोधित करते रहते थे।

आप इन लोगों को सर्वदा यह उत्तेजना दिया करते थे कि जिस प्रकार आप के पूर्वजों ने इस राज्य की नींव को चिर-स्थायी करते हुए इसकी मान-मर्यादा और कीर्ति को अपने अपने सद्गुणों से उज्वल किया था, उसी प्रकार आप लोग भी आधुनिक काल के अनुसार इस राज्य के कार्य में मेरा हाथ बटावें; और जहाँ कहीं मुझ से गलती हो जाय (क्योंकि गलती मनुष्य से होना संभव है) मुझे सूचित करें। साथ ही साथ आप लोग अपनी धार्मिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करते रहें। आप लोग सर्वदा यह स्मरण रखें कि खाने पीने और मौज उड़ाने से भविष्य में आप लोग तथा आपके बालक अयोग्य, आलसी और कर्जदार बन जायँगे; और एक दिन वह आवेगा जब कि स्वस्थान को, जिस स्टेट को आपके पुरुषाओं ने जाने जोखों में डाल कर, नाना प्रकार के संकटों को सहन कर कमाया है, वह शीघ्र ही बरबाद हो जायगी। मेरी यही आन्तरिक इच्छा है कि आप लोग स्वतः सम्हलते हुए अपने अपने बालकों को योग्य बनाने की विशेष चिन्ता करें। यदि आप लोग योग्य बनेंगे तो आप लोगों की योग्यता और उत्तम आर्थिक स्थिति से आपकी, मेरी और इस राज्य की कीर्ति होगी।

(४) रेवेन्यू—

इस महकमे के अधीन राज्य के माल विभाग की आय एकत्र करने के सिवाय कृषकों की कृषि सम्बधी कुल व्यवस्था और उसका रेकार्ड रखा है।

(५) फाइनेन्स--

राज्य के करोड़ों रुपये लगा कर व्यापार के उन्नतर साधन को अपना कर अपनी आय में आपने वृद्धि की। आप आय की वृद्धि पर जिस प्रकार ध्यान रखते थे, उसी प्रकार उसके व्यय पर भी सदा लक्ष रखा करते थे। अपनी कुल आय पर केवल ७ फी सदी के हिसाब से आपने अपना खर्च रखा था। आपने अपने राज्य के बजट को इस उत्तम प्रकार से विभक्त किया था कि कठिन से कठिन समय उपस्थित होने पर भी बजट में कमी न होने पाती थी। और सिविल, मिलिटरी, रेकरिंग, नॉन-रेकरिंग, डेवेलपमेन्ट स्कीम, फेमिन आदि खर्चों के लिये आपने अलग अलग बड़ी रकमें स्थायी रूप से नियत कर दी थीं। इतना ही नहीं, वरन् भीषण युरोपियन युद्ध के समय में करोड़ों रुपयों की अनेक प्रकार से अमूल्य सहायता देने के उपरान्त भी राज्य-प्रबन्ध को समान रूप से चलाते रहना और किसी कार्य में न्यूनता न आने देना यह बात सिद्ध करता है कि माधवराव महाराज एक अद्वितीय शक्ति के विलक्षण फाइनेंशियर थे। इस बात का ज्वलन्त प्रमाण यह है कि पिछले महायुद्ध के शोचनीय आपत्ति काल में द्रव्य के संग्रह के लिये भारत सरकार तथा बड़े-बड़े नामांकित कार्यालयों और अन्य देशी राज्यों के तो व्यय में कमी करने की योजना हुई थी; परन्तु ग्वालियर का बजट पूर्वानुसार ही स्थित रहा। और महाराज ने आश्चर्यजनक विशेषता यह कर दिखाई कि राज्य के कर्मचारियों को, जो

अल्प-वेतन पर अपना निर्वाह करते थे, उनको मँहगाई अलावन्स बरसों दिया था।

(६) न्याय विभाग (लेजिस्लेटिव डिपार्टमेन्ट)--

आपने इस विभाग का सुधार करके स्वतंत्र न्याय सम्बंधी विचारालयों की नियुक्ति की। आपका अपनी पुत्रवत् प्रजा के लिये यह सुधार भारत में पहला ही सुधार है, जो भारत सरकार भी आज दिन तक अपने ब्रिटिश राज्य में करने से असमर्थ रही। आपके इस अपूर्व सुधार से न्यायालय सम्बधी कार्यों में बहुत उन्नति हुई; और मजालिस खास में इस विभाग के एक स्वतंत्र मेम्बर की योजना करने से यह सुधार सुदृढ़ हो गया है।

आपने केवल प्रजा के लाभार्थ स्वतंत्र न्यायालयों की व्यवस्था कर के ही संतोष नहीं माना, बल्कि प्रजा के सुख के लिये, अर्थात् उनकी सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक अड़चनों का निवारण करने के मुख्य उद्देश्य से स्थान स्थान पर पंचायत संघ, साहूकारान संघ और उपदेशक (मसालिहती) संघ स्थापित किये। न्याय सम्बंधी नियमों को निर्धारित करने के लिये आपने मजालिस कानून का संगठन किया और राज्य-प्रबन्ध में प्रजा के स्वतंत्र विचारों का अधिक समावेश होने के लिये सन् १९२१ ई० के अक्टूबर में मजालिस आम की स्थापना की।

(७) अपील--

हाई कोर्ट के निर्णय से असंतुष्ट होनेवाली प्रजा को अपने मुआम्ले में चाराजोई कर के उचित न्याय मिलने के मुख्य अभिप्राय

स इस दफ्तर की योजना की गई है।

(८) व्यापार और कर—

पूर्व में कृषकों को अपना उत्पन्न किया हुआ माल अपने ही यहाँ महाजन के हाथ बेचना पड़ता था। इससे उनको अधिक नुक्सान रहता था। यदि कोई मनुष्य अपना माल किसी दूसरे स्थान पर बेचने के लिये उस स्थान से बाहर ले जाता था तो उसको उस पर कर देना पड़ता था। इसी प्रकार व्यापारी को लाने और ले जाने वाले माल पर कर देना पड़ता था; पर इसका कोई व्यवस्थित रूप से नियम नहीं था। परन्तु राज्य की व्यवस्था का भार हाथ में लेने पर इन संपूर्ण दोषों को दूर करने के लिये आपने एक स्वतंत्र विभाग की योजना की और अनेक उत्तम नियम निर्धारित करके स्थान स्थान पर आने-जाने वाले माल की उचित व्यवस्था के लिये कस्टम्स के नाके स्थापित किये। आज संपूर्ण व्यापारी तथा कृषक समाज अपना माल राज्य से बाहर भेज कर और अन्दर मँगवा कर सुलभता से व्यापार कर रहा है।

व्यापार को सुचारु रूप से व्यवस्थित करने के लिये आपने लाखों रुपये व्यय करके राज्य में सड़कों, मण्डियों, रेल और डाक का उचित प्रबन्ध कर दिया है। आज लगभग ४० लाख रुपये के मूल धन से सौ कारखाने कार्य कर रहे हैं।

एक्साइज—इसी प्रकार मादक पदार्थों के क्रय-विक्रय की पूर्व में कोई व्यवस्था नहीं थी, जिससे अधिक लोग अपना तन और धन नष्ट करते हुए दुखी बने रहते थे। परन्तु आपने

निकटवर्ती अनेक देशी राज्यों के साथ ठहराव करके और अपने राज्य के समस्त केन्द्रों को नियम-बद्ध करके मादक पदार्थों पर कड़ा कर लगा कर एक बड़ी रुकावट उत्पन्न कर दी है।

(९) शिक्षा—

आपके राज्याधिकार प्राप्त करने के समय शिक्षा-विभाग का बजट बहुत कम था। स्त्री-शिक्षा, कला-कौशल की शिक्षा तथा स्पेशल ट्रेनिंग के लिये उस समय कोई प्रबन्ध नहीं था। आपने शिक्षा के प्रचारार्थ बहुत अधिक धन व्यय करके आवश्यकतानुसार अनेक स्थानों पर अंग्रेजी, हिन्दी तथा अन्य प्रकार के विशाल और साधारण विद्यालयों की व्यवस्था की, जिनमें आज हजारों विद्यार्थी विद्या प्राप्त कर रहे हैं। इसके सिवाय योग्य शिक्षकों के तैयार करने के अभिप्राय से दो नॉर्मल स्कूल, कानूनगोयान, पटवारियान, कस्टम्स, पुलिस, सिविल सरविस आदि स्कूल स्थापित किये हैं।

इनके सिवाय ग्वालियर की संसार-प्रसिद्ध गायन-कला के हितार्थ एक गायन-कला-भवन, सरदारों के बालक-बालिकाओं के अपने स्वजाति के बालकों के, तथा क्षत्रियों के हितार्थ पृथक पृथक स्कूल स्थापित किये हैं और उच्च शिक्षा में उत्तीर्ण होने वाले अनेक इच्छुक नव-युवक भारत तथा युरोप में अनेक प्रकार की कला-संपादन करने के अभिप्राय से प्रति वर्ष भेजे जाते हैं।

बालक-बालिकाओं की शिक्षा के विषय पर आपने अनेक बार नाना प्रकार से शिक्षा के उत्तम गुणों का वर्णन किया है। आप केवल पुस्तकों के पढ़ने पढ़ाने की या अपने जीवन-निर्वाह के लिये धंधे करने की अथवा वैतनिक सेवा करते हुए अपने जीवन की समाप्ति कर देने की शिक्षा को शिक्षा नहीं कहते थे और न आप शिक्षा का यह मतलब मानते थे कि दूसरों को अपने पांडित्य से मुग्ध करके प्रजा जनों क नेता बनने में ही शिक्षा की परि-समाप्ति है। प्रत्युत् इस सम्बन्ध में आपके विचार इतने उच्च तथा भावपूर्ण हैं जिनसे प्रत्येक नागरिक सद्गृहस्थ, विद्यार्थी और अध्यापक यथेष्ट लाभ उठा सकता है। शिक्षा के विषय में आपने लिखा है—

"तालीम का असर हमारी सन्तान पर ऐसा पड़े कि जिससे मुल्क में हर प्रकार के लोग हिल-मिल कर रहें। अपने धर्म को समझ कर उसकी पाबन्दी करें। अपने समाज का सुधार करें, देश-सेवक और राज-भक्त बनें। उनके विचार ऐसे हों जिनसे वह मुल्क को सरसब्जी और तरक्की की ओर मायल करके उन बातों की, जो मुल्क में खराबियां पैदा करनेवाली हैं, रोक कर सकें; जैसे कि राज-विद्रोह, हरताल और अनेक प्रकार की बुरी बातें, जो नुक्सान पहुँचाने वाली हैं, मुल्क में पैदा न हों। सब से अव्वल तालीम की सीढ़ी यह है कि लड़के व लड़कियाँ तन्दुरुस्त रहें। मदरसों की तालीम की दूसरी सीढ़ी यह होना चाहिए कि बालकों में जो बुरी आदतें घरों में

पड़ जाती हैं, उनको दूर करना; और तालीम की तीसरी सीढ़ी यह होना चाहिए कि बालक अपने धर्म से वाकिफ हों और उसके पाबन्द हों। धर्म से हीन होकर कोई काम तरक्की के दरजे पर नहीं पहुँच सकता। जिसका जो धर्म है, उस पर उसको भरोसा करना जरूरी है।

म्युनिसिपेलिटियाँ—अनेक नगरों और कस्बों में म्युनिसिपेलिटियाँ स्थापित करके प्रजा-जनों के रहन-सहन, स्वास्थ्य, जल-वायु आदि की उत्तम व्यवस्था की है।

(१०) कृषि—

कृषकों की गिरी हुई दशा को उन्नत करने के अभिप्राय से जिस प्रकार डॉक्टर हिराल्डमेन ने बम्बई की, प्रोफेसर स्लेटर ने मद्रास की, डॉक्टर राधाकमल मुकर्जी ने बंगाल और संयुक्त प्रान्त की तथा सर गंगाराम ने पंजाब के ग्रामों के कृषि और कृषकों की दशा देख कर उनके उत्थान के लिये अनेक साधन निर्धारित किये थे, ठीक उसी प्रकार महाराज माधवराव सेन्धिया ने ग्वालियर राज्य का भ्रमण कर कृषि तथा कृषकों की परिस्थिति का अनुभव करके उनके उत्थान के हितार्थ करोड़ों रुपये व्यय करके अनेक सुव्यवस्थाएँ करा दी हैं।

लाखों करोड़ों रुपये व्यय करके अनेक बड़े-बड़े सरोवर, नहर, ताल, कुएँ आदि बनवा कर राज्य में एक ओर से दूसरे छोर तक को-ऑपरेटिव बैंक, को-ऑपरेटिव सोसायटियाँ, अनेक स्थानों पर जमींदारी स्कूल और गाँव-गाँव में कृषकों के हितार्थ

उपदेशकों की योजना की है। कई स्थानों पर आदर्श कृषि, कृषकों के लाभार्थ नाना प्रकार के आधुनिक यंत्र, हृष्ट-पुष्ट पशु उत्पन्न करने के अभिप्राय से कई पशु-शालाएँ और उत्तम बीज मिलने के लिये बहुत से बीज-भण्डार खुलवाये हैं।

जंगली और असभ्य जातियों को, जिनका जीवन-निर्वाह केवल चोरी, डकैती और लूट-मार पर ही अवलंबित था, शिक्षित बनाने के उद्देश्य से राज्य में दो केन्द्र स्थापित कर इन लोगों तथा इनके बालकों को शिक्षा दिलाने की व्यवस्था करा दी है। इस शिक्षा का आज ऐसा प्रभाव पड़ा है कि ये लोग चम्बलादि नदियों के खड्ढों में, जहाँ पर पहले हिंसक पशुओं ने अपना निवास स्थान बना रखा था, कृषि कार्य में दत्त-चित्त हो गये हैं और अपने परिश्रम से लाखों बीघे भूमि को उपजाऊ बना दिया है।

अपने राज्य के सब विभागों को आपने इन उपर्युक्त १० दफ्तरों में विभाजित कर इनके कार्य-संपादन के लिये १२ पॉलिसियाँ लिखी हैं। इन पॉलिसियों के द्वारा जिस प्रकार आपके स्वकीय प्रजा सम्बंधी और धार्मिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है, उसी प्रकार इनसे प्रत्येक मनुष्य, साधारण ऑफिसर हो या मातहत, धनी हो या निर्धन, छोटा हो या बड़ा, राजा हो अथवा प्रजा, सब को अपने स्वकीय, प्रजा सम्बंधी और सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में सफलता प्राप्त हो सकती है। आपके इन

अनुभव-सिद्ध गूढ़ तत्वों को बिना अपनाये सफलता प्राप्त करना अत्यंत कठिन है।

आपने जनरल पॉलिसी में ऐसी-ऐसी बारीक और अनोखी बातों का उल्लेख किया हैं कि जिन्हें साधारण स्थिति के मनुष्य पढ़कर आश्चर्य में रह जाते हैं, कि इन बारीक बातों का एक ऐसे व्यक्ति को, जो सर्वदा महलों में निवास करते हुए बड़े लोगों से मिलते हों, कब और किस प्रकार खोज करने का समय मिला। इसमें आपने बतलाया है कि राजा-महाराजाओं को लोग किस प्रकार धोखा देकर अपने स्वार्थ की सिद्धि करते हैं, किस प्रकार अपनी छिपी हुई इच्छा की पूर्ति करने के लिये सीधे-सादे बने रहते हैं, और दूसरों की जड़ खोदने की कैसी विचित्र रचनाएँ रचकर मालिक को बहकाते हैं। युवा अवस्था में अपनी स्वार्थ-सिद्धि के कारण कैसे-कैसे प्रलोभनों से मालिक की आदतें बिगाड़ देते हैं, आदि बातों का इसमें भली-भाँति दिग्दर्शन कराया गया है।

इसके सिवाय अपने कृषक समाज के फायदे के लिय एक लाभदायक जमींदार हितकारी नामक ग्रन्थ की रचना की है। इसमें कृषि सम्बंधी अनेक बातों को बतलाते हुए अनेक प्रकार के यंत्रों के चित्र और उनके लाभ पूर्ण रूप से बतलाये हैं। इन पुस्तकों के अतिरिक्त आपने तिब्बे हैवानात, रहबरे शिकार शेर, सुख की कुंजी, व्यूज ऑफ स्लेमेन आदि पुस्तकों की रचना की है, जो वास्तव में बड़ी उपयोगी हैं। इन उपर्युक्त ग्रन्थों की रचना से

पाठकों को इस बात का सहज में अनुमान ही नहीं परन्तु सत्यता प्रतीत हो जायगी कि आप एक अद्वितीय शक्ति के व्यक्ति होते हुए बड़े गंभीर, विद्वान्, अनुभवी, दूरदर्शी और चतुर महाराज थे।
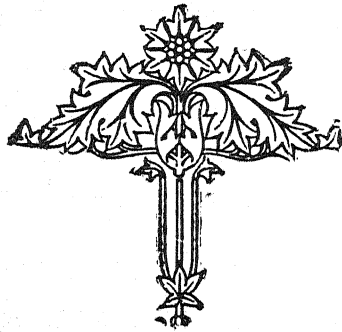
महाराज माधवराव का धार्मिक जीवन

जिस प्रकार जल का स्वाभाविक धर्म नीचे की ओर जाना है और अग्नि का धर्म ऊपर की ओर उठना है, उसी प्रकार मनुष्य का स्वाभाविक धर्म ईश्वर की ओर जाना है, यह एक नैसर्गिक सिद्धान्त है। जो लोग अपनी मनोवृत्ति को ईश्वर की ओर सदा लगाए रहते हैं उनमें तीन प्रकार के सद्गुणों का प्रादुर्भाव सहज ही में हो जाता है। इन गुणों में से प्रथम गुण मनुष्य का क्रिया-शील बनना है। तब उसमें विचार और दया करने की शक्ति का संचार होता है और तभी वह धार्मिक बनता है। धार्मिक शैली तीन प्रकार की होती है—मानसिक (मन से), आर्थिक (द्रव्य से) और शारीरिक (शरीर से)। बड़े-बड़े महात्मा लोग मानसिक वृत्ति से दीन-दुखियों पर दया करते हुए संसार में धर्म का प्रचार करते रहते हैं; द्रव्यवान् लोग द्रव्य की सहायता से धर्म करते हैं और निर्धन लोग दूसरों की सेवा-शुश्रूषा कर के धर्म का उपार्जन करते हैं। धार्मिक मनुष्य का लक्षण यह है कि वह सर्वदा ईश्वर से डरता रहे। एक महात्मा का वचन है--

पुण्यवान् जन होहिं जे, तिनकी कहु पहिचान।
ईश्वर डर जाके हृदय, पुण्यवान् तेहि जान॥

जिस मनुष्य में धार्मिक भावों की अधिक जाग्रति बनी रहती है, उसको सतोगुणी की संज्ञा दी जाती है; क्योंकि धर्म करने वाले मनुष्य का ईश्वर पर अधिक प्रेम रहता है। धर्म के कारण परमार्थ में प्रीति, ईश्वर में प्रेम और परोपकार में मन लगता है। वह अनेक प्रकार के दान करता है, निस्पृह होकर हजारों और लाखों दीन-दुखियों को भोजन और वस्त्र देता है और धर्मशाला, पाठशाला, बावड़ी, सरोवर और मन्दिर बनवाता है। धार्मिक मनुष्य संकट के समय धैर्य धारण करता है; सब मनुष्यों से और सब धर्मों से मित्रता रखता है; किसी से विरोध नहीं करता; सब से नम्रता के साथ भाषण करता है; परोपकार के लिये कष्ट सहन करता है। दूसरों के दुःख से दुःखित और सुख से सुखी रहता है; और दूसरों की शोभा से अपनी शोभा और दूसरों की बुराई से अपनी बुराई समझता है।

पूज्यपाद जगत्गुरु भगवान् श्रीशंकराचार्यजी महाराज ने अनेक धर्मों और मतों का सच्चा स्वरूप सामने लाकर अद्वैत सिद्धान्त स्थापित किया था। वे अलौकिक पुरुष थे और उन्हीं का सामर्थ्य था कि बौद्ध मत को छिन्न-भिन्न कर के सनातन धर्म का पुनरुद्धार किया। ऐसी आत्म-त्यागी दैवी-प्रतिभा-सम्पन्न अंशधारी आत्माएँ संसार में दैवी कार्य करने के हितार्थ जन्म लेती हैं और जगत् का उपकार करके चली जाती हैं।

जिस प्रकार रात्रि की शोभा चन्द्रमा से है, पुष्प की शोभा सुगन्ध से है, उसी प्रकार राजा की शोभा धर्म से है। संपूर्ण

बलों की अपेक्षा धर्म बल ही मनुष्य को ज्ञानवान् और सदाचारी बनाता है। संसार में जितने धर्म हैं, उनमें से प्रायः सभी को राज्याश्रय प्राप्त हुआ है और इसी के सहारे वे बढ़े भी हैं। मुसलमानी शासन-काल में बादशाहों के आश्रय में इस्लाम धर्म का इतना प्रचार हुआ कि जिसके फलस्वरूप भारत में इसके अनुयायी लगभग सात करोड़ के हो गए हैं। इसी तरह ईसाई धर्म भी राज्याश्रय से वृद्धि करता चला जा रहा है। तात्पर्य यह कि धर्म के प्रचार में और उसकी वृद्धि में राज्याश्रय का ही मुख्य महत्व रहता है। पूर्वकालिक इतिहास इस बात की पूर्ण रूप से साक्षी दे रहा है कि सनातन धर्म को जीवित रखने के लिये बड़े-बड़े महान् पुरुषों ने अनेक प्रकार के कष्ट सहन किये हैं तथा राजा-महाराजाओं ने उसके संरक्षणार्थ लाखों रुपये व्यय किये हैं।

उसी प्रकार महाराज माधवराव लाखों रुपये व्यय कर के अपने राज्य में सनातन धर्म को किस प्रकार चिर-स्थायी कर गये हैं तथा अन्य धर्मों से किस प्रकार प्रेम दिखला गये हैं, यह निम्नलिखित बातों से सहज ही में जाना जा सकता है—

बड़े-बड़े साधु-महात्मा पर्यटन करते हुए गृहस्थ जनों को अपने प्राप्त ज्ञान द्वारा धार्मिक उपदेश देकर उनमें स्व-धर्म की जाग्रति करते हैं, जिससे समाज धार्मिक तत्वों का विस्मरण न करता हुआ सर्वदा उसका अनुयायी बन कर धार्मिक नियमों का पालन करता रहता है। इसी उपदेश को सामने रख कर

महाराज ने राज्य के अनेक स्थानों पर योग्य उपदेशक रखे थे। उनके लिये आदेश था कि वे प्रजा को धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक उपदेश देकर कथा-वार्ता श्रवण कराते हुए प्रजा में धार्मिक जाग्रति करें, जिससे प्रजा में धार्मिक बुद्धि सदा बनी रहे—लोग अपने धर्म को पहचानें और उससे प्रेम करें।

संसार में पति-पत्नी का संबंध अत्यन्त कोमल और प्रेममय होता है; और जिस गृह में पति-पत्नी का प्रेम एक दूसरे के प्रति पूज्य, श्रद्धालु और दयामय होता है, उस गृह में मानो लक्ष्मी का साक्षात् निवास ही होता है। वहाँ सर्वदा सातों प्रकार के सुख विराजमान् रहते हैं। परन्तु जिस पति-प्राणा स्त्री ने अपने पूर्व-संचित कर्मों से तथा आधुनिक अनेक तपों और दानों से, पतिदेव की पूजा से और परमात्मा की असीम कृपा से पुत्र के मुख-चन्द्र का दर्शन किया हो, वह माता संसार में धन्य है। और जिस जननी ने अपने प्राण समान हृदय के लाल को अपना दूध पिलाकर, पालने में सुलाकर, निशि दिन नाना प्रकार के कष्ट सहन कर बड़े लाड़ प्यार से पालन-पोषण करते हुए अपने मनोगत उच्च आचार और विचार से, शुद्ध मनो-भाव से, अनेक प्रकार के सद् उपदेश देकर अपने पुत्र को देश-हितैषी, सच्चरित्र, पुण्यवान्, परोपकारी, और ईश्वर-भक्ति आदि के मंत्रों से दीक्षित कर योग्य बनाया हो, वही माता संसार में सच्ची माता कही जा सकती है।

इस पुण्य-भूमि भारत में पूर्वकाल में तो ऐसी अनेक माताएँ हो चुकी हैं; परन्तु आज भी ऐसी आदर्श माताएँ प्रातःकाल के तारागणों की तरह चमकती हुई यत्र-तत्र कुछ दिखलाई पड़ती हैं। इन्हीं के समान अनुभवी और आदर्श राजमाता श्रीजीजा महाराज भी थीं, जिन्होंने अपने एकमात्र पुत्र माधवराव को योग्य दीक्षा से दीक्षित कर उपर्युक्त गुणों से विभूषित किया था; और माधवराव महाराज भी यथार्थ में सत् पुत्र हुए थे।

आप 'मातृ देवो भव' इस श्रुति वाक्य को पूर्णतया चरितार्थ करते हुए अपनी पूज्य-माता की पूजा (सत्कार) करते थे। आपने अपनी माता की आज्ञा का पालन करने में कभी आनाकानी नहीं की। जब आप अपने राज्य से बाहर प्रयाण करते थे तब आप अपनी जननी के पवित्र चरणों में मस्तक नवा कर और उनका हार्दिक आशीर्वाद लेकर ही बाहर जाया करते थे और राज्य का संपूर्ण भार आप उनको सौंप जाया करते थे। वृद्ध माता का स्वास्थ्य जब बिगड़ता था तब आप अधिक दान-धर्म किया करते थे और वह थोड़े ही समय के उपरान्त चंगी भी हो जाया करती थीं। आपका यह पूर्ण विश्वास था कि अधिक दान-धर्म करने से बड़े से बड़े संकट टल जाया करते हैं और इस बात का आपको अनेक बार अनुभव भी हो चुका था। इसी विश्वास को लक्ष में रख कर आपने अपनी माता के अन्तिम दिनों में लाखों रुपये अनेक प्रकार से दान किये और आप स्वयं भी दिन रात उनकी शय्या के पास बैठ कर

ईश्वर भजन किया करते थे। अपनी प्राण समान प्यारी और आदर्श माता का शरीरान्त हो जाने पर संपूर्ण क्रिया आपने अपने हाथों से की थी। इस समय आपने शास्त्रानुसार संपूर्ण प्रकार के दान देकर अपने धार्मिक होने का परिचय दिया था।

मातृ-भक्त महाराज ने अपनी पूज्य-माता की स्मृति में एक सुन्दर संगमरमर की प्रतिमा शिवपुरी में बनवा कर एक विशाल और मनोमोहक छत्री में पधराई है; और बाहर आँगन में दोनों ओर सीता-राम और राधा-कृष्ण की चित्ताकर्षक मूर्तियाँ पधरा कर मध्य में एक स्फटिक के शिवलिंग की स्थापना कराई है; और विद्वान् ब्राह्मणों के द्वारा त्रिकाल पूजा अर्चा की उत्तम व्यवस्था कराई है। छत्री के चारों ओर एक विस्तृत उद्यान और बाटिका तथा स्थान स्थान पर झरनों के पुल, बड़े-बड़े कुंज और दर्शकों के विश्राम के लिये बड़ी-बड़ी बारहदरियाँ और संगमरमर के फव्वारों की दोनों ओर चित्र-विचित्र कतारें, बड़े बड़े हौजों के चारों ओर पत्थर की खुदाई के काम की सुन्दर बेंचें और पास-पास बिजली की रोशनी की व्यवस्था करा कर इस स्थान को अपूर्व शोभायमान और मनोरंजक बनवा दिया है, जिसके दर्शन मात्र से मनुष्य के अन्तःकरण में आपके विचित्र और अकथनीय मातृ-प्रेम की झलक चमक जाती है।

यह स्थान ऐतिहासिक काल से ही बाणगंगा (बावनगंगा) तीर्थ कहलाता है, जहाँ पर आज भी अनेक पूर्वकालिक कुंड बने हुए हैं और इस स्थान की नैसर्गिक शोभा तथा पूज्य-माता

की विशाल छत्री वन, उपवन और बाटिका का सुहावना दृश्य देख कर आपकी सच्ची मातृ-भक्ति की साक्षी हुए बिना नहीं रहती। इसके अतिरिक्त यहाँ पर एक अन्न-सत्र है जिसमें नित्य ब्राह्मणों, साधुओं और संन्यासियों को अनेक प्रकार का भोजन मिलता है। लगभग दो मील पर एक धर्मशाला और सदावर्त है जहाँ पर नित्य कच्चा सामान दिया जाता है। यहाँ का खर्च सतत चलता रहे, भविष्य में उसमें किसी प्रकार की त्रुटि न आने पावे, इस मुख्य अभिप्राय से आपने छत्री सम्बन्धी कार्यों के लिये नौ लाख रुपये और सदावर्त के वास्ते ५८,००० रुपये स्थायी रूप से बैंक में रखे हैं। इसके सूद की कुल रकम उपर्युक्त दान-धर्म में खर्च की जाती है। इसकी व्यवस्था का भार बड़े-बड़े राज्याधिकारियों के हाथ में दिया है। कुछ दूरी पर एक विशाल ताल बनवाया है और तट पर बहुत सुन्दर और राजसी ठाठ की मूल्यवान् सामग्री से सुसज्जित क्लब बनवा कर आपने अपनी माता की स्मृति में इसका नाम "सख्यासागर" रखा है, जहाँ पर सायंकाल को नगर-निवासियों की खेल तमाशे के लिये और सागर में जल-क्रीड़ा के लिये खासी भीड़ लगी रहती है। ग्रीष्म काल में इस शिवपुरी की, नहीं नहीं माधव कृत स्वर्ग की शोभा को देखकर ग्वालियर राज्य के निवासी ही नहीं, वरन् भारत के अनेक राजे-महाराजे, भारत सरकार के बड़े-बड़े ऑफिसर और पश्चिम के अनेक महानुभाव आनन्द सागर में गोता लगाने लगते हैं और आपकी धार्मिकता

और मातृ-भक्ति की मुक्त-कण्ठ से सराहना करते हुए लौटते हैं। आपने अपनी आदर्श माता की श्राद्ध तिथि पर अनक अपाहिजों, कंगालों और दीन-दुखियों तथा अनाथों को भोजन कराने की भी व्यवस्था कर दी है।

अनेक महानुभावों ने साधु-महात्माओं के तथा विद्वानों के प्रदर्शित मार्ग पर चलकर जिस सुख का, जिस अलौकिक शान्ति का, जिस परमानंद का दिव्य अनुभव किया है, उन सब के गूढ़ उपदेशों का यही तात्पर्य है कि धर्म-बल सब बलों से श्रेष्ठ है, जिससे इस लोक में संपूर्ण सुख और कीर्ति प्राप्त होती है तथा परलोक में शान्ति मिलती है। यह पंचभूत शरीर अनित्य है, वैभव सदा नहीं रहता, मृत्यु सदा निकट है, मृत्यु के पश्चात् धर्म के सिवाय और कोई मनुष्य का साथी नहीं होता; अतएव धर्म संग्रह करना चाहिए।

धार्मिक महाराज ने इस बीसवीं शताब्दि के धार्मिक काया-पलट के काल में देखा कि आज कल बहुधा जनता की वृत्ति देव-मन्दिरों में पहुँचने की अपेक्षा किसी रमणीय उद्यान तथा वाटिका में पहुँच कर आध्यात्मिक चर्चा की ओर अधिक हो रही है। प्रस्तुत समय के समाज की प्रवृत्ति अनेक विषयों के व्याख्यान सुनने की ओर अधिक बढ़ती जाती है। किसी रमणीय स्थान में पहुँच कर नाना प्रकार के ज्ञान संबंधी विचारों पर मनन करने का चाव दिनों-दिन बढ़ता चला जाता है। अनेक धर्मों के प्रेमी एक साथ बैठकर ज्ञान चर्चा करने में

अपनी उन्नति का हेतु समझ रहे हैं। इन बातों पर विचार कर आपने अपने राज-प्रासाद के विस्तृत उद्यान के पाश्चिमी भाग में अपनी आत्म-तुल्य प्रजा के अन्तःकरण में धर्म की ज्योति जगमगाने के मुख्य अभिप्राय से सनातन धर्मावलंबी प्रजा के लिये एक राधा-कृष्ण का मनोमोहक मन्दिर, ब्रह्मविद्या प्रेमी जनता के लिये एक थियॉसोफिकल लॉज, सिक्ख प्रजा के लिये एक ग्रन्थ साहब का गुरुद्वारा और इस्लामी जनता के लिय एक उत्तम मसजिद का निर्माण कराया। इतना ही नहीं, वरन् इनमें संपूर्ण उपयुक्त सामग्री रखवा कर इनके विधिपूर्वक पूजन अर्चन की व्यवस्था करा दी है और इनके मासिक खर्च के लिये द्रव्य की सुव्यवस्था करा दी है। इसके अतिरिक्त अपनी पूज्य-माता की एक सुन्दर संगमरमर की प्रतिमा बनवाकर इसी पार्क में स्थापित कराकर पास में एक दर्शनीय और मनोरंजक स्थान में सरस्वती भवन (पुस्तकालय) की योजना कर दी है। इन धार्मिक स्थानों में पृथक-पृथक जनता की धार्मिक प्रथा के अनुसार हरि-कीर्तन, कथा, पुराण, भजन तथा व्याख्यान होते रहते हैं और जन-समूह अपने अपने धर्मानुसार इन धार्मिक स्थानों पर पहुँच कर लाभ उठाते रहते हैं।

आपने इसी पार्क में विद्यार्थियों के लिये, प्रौढ़ जनों के लिये तथा महिलाओं के लिये खेलने के मैदान, सन्ध्या-वंदन करनेवालों के हेतु सुवर्णरेखा नदी के तट पर घाट, वायु सेवन करनेवालों के और एकान्त में बैठ कर ईश्वर भजन में निमग्न होनेवालों के

लिये अनेक प्रकार के कुंज, जलाशय, पुष्प-वाटिकाएँ और मैदान बनवाये हैं। इसके साथ ही साथ प्रजा के विनोदार्थ वन के पशु-पक्षियों से लेकर हिंसक जन्तुओं तक के रखने की व्यवस्था करा दी है, जहाँ पर चित्र-विचित्र पक्षियों का मधुर गान, कोयल की मन लुभानेवाली कूक, पपीहे का तथा बगुले, सारस आदि का दृश्य, नाना प्रकार के कपोतों का कलरव, मोर और मैना का मधुर गान, बंदरों की हूंक और हिंसक पशुओं की गर्जना से कभी मनुष्य को आनन्द प्रतीत होता है, तो कभी भय मालूम होता है।

राज्य के देव-मन्दिरों, मसजिदों और उपासना-गृहों की देख-रेख, नित्य के पूजा-पाठ तथा जीर्णोद्धार के हेतु आपने लाखों रुपयों का वार्षिक बजट बनाकर इसका एक पृथक दफ्तर स्थापित कर दिया है। राज्य के अनेक मनोरंजक स्थानों में देवमन्दिर बनवा कर प्रेक्षणीय स्थानों का महत्व और अधिक बढ़ा दिया है। राज्य भर के देव-मन्दिरों और मसजिदों में विद्वान् पुजारी और योग्य मुल्लाओं के रखने की उचित व्यवस्था की है। पुजारियों के लिये आपने पूजा-विधि नामक कई पुस्तकों की रचना कराकर उनकी परीक्षा स्थापित कर दी है; और इसी प्रकार मुल्लाओं के लिये इस्लाम के धार्मिक ग्रन्थों का चुनाव कराकर आपने एक बड़ा उपकार किया है।

पुजारियों का इम्तहान इस अभिप्राय से रखा गया कि इस वर्ग के जो लोग देवस्थानों की पूजा करते है, वे धार्मिक तत्वों

को जानें और आचार-विचार से रहकर अपने सद् उपदेश से ग्राम-निवासियों की धार्मिक उन्नति करते रहें। नाम मात्र के ब्राह्मण कहला कर देवस्थान में कोरे दिखावटी पूजन अर्चन करने से धर्म की जाग्रति नहीं हो सकती। विद्वान् ब्राह्मण ही अपने आत्मिक बल तथा धर्म बल की उन्नति करता हुआ प्रजा में निरंतर ईश्वर-भक्ति, संघ शक्ति और राज-भक्ति आदि अपूर्व गुणों की वृद्धि करके उनको उत्तम नागरिक बना सकते हैं।

आपने अपने दौरे में जब अनेक देवस्थानों की तथा उनके पूजन के लिये माफी पानेवाले पुजारियों की स्थिति देखकर यह बात सहज में जान ली कि ये माफीदार पुजारी बहुधा धर्म से च्युत होते हुए अधिक सुखोपभोगी हो गये हैं, तब आपने धार्मिक कार्यों में लगनेवाली माफी को उचित रीति से दो भागों में विभक्त कर दिया—(१) माफी देवस्थानी और (२) माफी धर्मादाय। इनको लाखों रुपयों की माफी नगदी के रूप में दी जाती है और इसके सिवाय लाखों बीघे के लगभग भूमि भी इनको मिली हुई है। और उपासना गृहों के लिये भी लाखों रुपये नगद और लाखों बीघे भूमि माफीदारों को मिली हुई है।

धर्मादाय केवल राज्य की ही प्रजा को दिया गया हो, यह बात नहीं है; प्रत्युत् भारत के अनेक तीर्थों और मुख्य मुख्य स्थानों पर; जैसे प्रयाग, मथुरा, हरिद्वार, वृन्दावन, बुरहानपुर, आगरा, पुष्कर, काशी, ब्रह्मावर्त, रत्नागिरी, पंढरपुर, शोलापुर,

पूना, नासिक आदि के योग्य ब्राह्मणों को भी दिया गया है। माफीदारों को माफी के लगभग १५० गांव मिले हैं।

आपने लाखों रुपये भारत के अनेक विद्यालयों, स्कूलों और सोसायटियों को दिये हैं और इसी प्रकार पश्चिम की अनेक सोसायटियों को भी दान रूप से लाखों रुपये दिये हैं।

धर्म के लिये माफी पानेवालों को आपने एक स्थान पर जो उपदेश किया है वह इस प्रकार है:—

"इनके साथ पॉलिसी यह होनी चाहिए कि इनको जिस काम के लिये माफी दी जाती है उस काम से ये वाकिफ हैं या नहीं, और उस काम को ठीक तौर पर अंजाम देते हैं या नहीं। अगर यह लोग अपने धर्म कार्य के संपादन करने के अयोग्य हैं तो इनके बालकों को शिक्षा देकर उनको योग्य बनाया जावे; क्योंकि ये ही लोग प्रजा को धर्म पर कायम रखने के लिये मुझे उचित जान पड़ते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को उसके धर्म पर कायम रखना राजा का मुख्य कर्तव्य है। जब यह लोग योग्य होंगे, तभी दूसरों को सदुपदेश दे सकेंगे और दूसरों पर इनका अच्छा प्रभाव पड़ेगा। इस कारण इन माफीदारान पर इस अभिप्राय से विशेष ध्यान रखना चाहिए कि यह लोग विद्वान् और योग्य हों, जिससे जन-समाज में इनका मान हो, आदर सत्कार हो इनके उपदेशों से प्रजा लाभ उठावे और राज-भक्त बने, जिससे राजा और प्रजा दोनों का लाभ हो।"

आपका पूर्ण विश्वास था कि यदि संकट के समय मनुष्य अपनी श्रद्धानुसार धर्म करे और ईश्वर का भजन पूजन करता रहे तो आया हुआ विपद्-काल टल सकता है। ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखने और सांसारिक कार्य सर्वदा उसको स्मरण रखते हुए करते रहने से ही मनुष्य सुखी बना रह सकता है। ईश्वर के नित्य मनन, चिन्तवन और ध्यान से मनुष्य सदा आरोग्य बना रहता है। ईश्वर के नाम-स्मरण में एक प्रकार की अद्भुत शक्ति है, जिसके कारण मनुष्य अपने आपको सदा निर्भय रखते हुए दूसरों पर प्रभाव डाल सकता है। और यही शक्ति अनेक प्रकार के संकटों का सहज में निवारण कर देती है। आपके इस विश्वास का एक छोटा सा उदाहरण इस प्रकार है--

एक वर्ष अगस्त महीना समाप्त हो गया, परन्तु जल की एक बूँद भी नहीं गिरी। प्रजा और विशेष कर कृषक गणों में भारी हाहाकार होने लगा। पशुओं को जल और तृण की कमी होने से अकथनीय कष्ट सहन करना पड़ा। ऐसे आपत्ति-काल में आपने बड़े धैर्यपूर्वक राज्य में स्थान-स्थान पर योग्य ब्राह्मणों के द्वारा जप और अनुष्ठान कराने की व्यवस्था की। थोड़े ही काल पश्चात् इतना जल गिरा कि प्रजा को संतोष हो गया। उस वर्ष से आपने यह नियम कर दिया कि मग नक्षत्र के आरंभ से ही राज्य की ओर से राज्य में विद्वान् ब्राह्मणों के द्वारा जप और अनुष्ठान कराया जाय।

महलों में विद्वान् ब्राह्मणों की कथाएँ होती रहती हैं। राजोपाध्याय और विद्वान् ब्राह्मणों की देख-रेख में नित्य-प्रति जप, अनुष्ठान, दान, धर्म होते रहते हैं। वेद-पाठी ब्राह्मणों का वेद-पठन होता रहता है, जिससे धर्म की जाग्रति बनी रहे। महाराज दौलतराव की छत्री में एक अन्न सत्र है, जहाँ पर सहस्रों ब्राह्मणों तथा अनाथों को भोजन और दाक्षिणा दी जाती है।

अवन्तिकापुरी (उज्जैन) में अपनी माता के शुभ-नाम से एक सदावर्त स्थापित किया है, जहाँ पर यात्रियों को तीन दिन तक अन्न दिया जाता है और आवश्यकीय बर्तन तथा वस्त्र दिये जाते हैं। प्रत्येक सिंहस्थ पर लगभग ८-९ लाख साधु-महात्माओं को सादर महीने भर यथेष्ट अच्छे भोजन की सामग्री दी जाती है। स्नान होने के अनन्तर प्रत्येक जमात के महन्त को, आदर-पूर्वक पूजन करके, नियमानुसार कीमती दुशाले और नगदी रुपयों की भेंट की जाती है। इस व्यवस्था में लाखों रुपया खर्च होता है। इसके लिये आपने प्रति वर्ष नियामित रकम अलग रखने का नियम कर दिया है।

माधव महाराज परम शिव-भक्त थे। आप नित्य-प्रति प्रातःकाल स्नान करके पार्थिव पूजन किया करते थे। पूजन के पश्चात् ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर और नमस्कार करके वस्त्र पहनते थे। इसके बाद जलपान किया करते थे। आपका यह नियम प्रवास में भी पूर्ण रूप से चलता था। जब आप शिमला, कलकत्ता या बम्बई को जाते थे तब जिस स्थान पर प्रातःकाल होता था,

वहाँ आपके लिये स्नान तथा पूजन की संपूर्ण व्यवस्था पहले से की जाती थी। शंकर के अनेक स्थानों में से शिवपुर के रामेश्वर और शिवपुरी के महादेवेश्वर परम प्रसिद्ध हैं। इन स्थानों पर आपने अनेक बार शिवरात्रि का व्रत करके बड़े ठाठ से पूजन किया था। इसी प्रकार कभी-कभी शिवरात्रि को ग्वालियर के कोटेश्वर और उज्जैन के महंकालेश्वर पर पहुँच कर रात्रि को पूजन किया करते थे। श्रावण मास में अनुष्ठान करनेवाले ब्राह्मणों को दुशाले और १००-१०० रुपये भेंट करते थे।

जिस दिन आप सत्यनारायण का व्रत करते थे उस दिन बड़े आचार-विचार से रहते थे, यहाँ तक कि गरमियों के दिनों में पहले तो जल ही नहीं ग्रहण करते थे; और यदि कभी अधिक आवश्यकता होती तो गंगा-जल पी लेते थे। इसी प्रकार श्रावण के सोमवार तथा आषाढ़ी एकादशी का व्रत रखते थे।

भादों के महीने में आप गणपति का व्रत करते थे और बड़े पूज्य-भाव और विकसित तथा प्रफुल्लित मन से गणपति की स्थापना करके गोपाल-कृष्ण का भजन-पूजन सप्ताह भर किया करते थे। इस सप्ताह में कम से कम दो घंटे रोज भजन करने के लिये बड़े-बड़े कर्मचारियों से भी आप अनुरोध करते थे। आप समय समय पर दर्शक गणों के मध्य में बैठ भजन श्रवण किया करते थे। इन दिनों गणपति-दर्शन और भजन श्रवण करने के लिये प्रत्येक मनुष्य बिना रोक-टोक राजमहलों में जा सकता है। आपके भजनों के समय में नगर-निवासियों और बाहर

के आये हुए बड़े-बड़े विख्यात संत्-महात्माओं और श्रेष्ठ पुरुषों का खूब जमाव रहता था। भजन करते समय आप भक्ति-रस में इस प्रकार सराबोर हो जाया करते थे कि कभी-कभी आपको अपने समय का भान ही नहीं रहता था; लोगों के सचेत करने पर आपको सुध आती थी। आपकी भक्ति को बड़े-बड़े महात्मा लोग सराहते थे। कभी-कभी तो आप अपनी भक्ति में यहाँ तक तन्मय हो जाया करते थे कि आप के नेत्रों से प्रेमाश्रुओं की धाराएँ बहा करती थीं।

आप ने अपने अनेक धार्मिक और दयापूर्ण कामों के साथ साथ प्रजा के दु:ख-निवारणार्थ अनेक स्थानों में योग्य और विद्वान् डॉक्टरों की योजना कर के बड़ा भारी उपकार किया है। औषधि आदि में भी लाखों रुपया व्यय किया जाता है। इसके सिवाय अनेक स्थानों पर वैद्यों की भी योजना कर के आयुर्वेदिक चिकित्सा का पुनः उद्धार किया है, जिसमें देशी दवाइयाँ वितरण की जाती हैं। सब प्रकार की कच्ची और तैयार की हुई शुद्ध औषधियाँ मिलने के मुख्य अभिप्राय से आप ने एक वृहद् फार्मेसी अपनी राजधानी लश्कर में हजारों रुपये व्यय कर के खुलवाई है, जिससे जनता को काष्ठादि व रसादि आयुर्वेदिक औषधियाँ सरलतापूर्वक मिल सकें। इसी के साथ अनेक स्थानों पर यूनानी औषधालय खुलवा कर उपर्युक्त फार्मेसी में यूनानी दवाइयाँ भी मिलने की व्यवस्था की है; और इसी लिये इस फार्मेसी का नाम "आयुर्वेदिक एन्ड यूनानी फार्मेसी" रखा गया है।

योग्य और शिक्षित दाइयों की कमी पूरी करने के अभिप्राय से लश्कर में जया आरोग्य अस्पताल में दाइयों का एक ट्रेनिंग स्कूल खुलवाया है; और प्रसव कराने के लिये लश्कर में कई और उज्जैन में एक जच्चाखाना खोला है। आप की दया की समाप्ति केवल अपनी आश्रित प्रजा के दुःख निवारण में ही न होती थी, वरन् भारत के तथा पाश्चात्य देशों के दीन-दुखियों तक भी पहुँचती थी। पिछले संसार-प्रसिद्ध महायुद्ध में अनाथों और असहायों के लिये लगभग ३ करोड़ रुपया सन् १९१४ ई० से सन् १९१८ ई० तक खर्च किया था। इस भूत दया का ऐसा अद्भुत् और चमत्कृत परिचय आप ने दिया था कि जिसकी प्रशंसा भारत और पाश्चात्य देश-निवासी छोटे से बड़े तक सब मुक्त-कण्ठ से कर रहे हैं।

धार्मिक महाराज जिस प्रकार अपने सनातन धर्म से प्रेम करते थे, उसी प्रकार आपका आदर भाव अपनी अहले-इस्लाम प्रजा के मुहम्मदी धर्म से भी था। इस धर्म के अनेक ज्ञानवानों से समय-समय पर आप मौलूद कराते और मुहर्रम के समय असंख्य अपाहिजों तथा दीनों को लगातार कई दिनों तक भोजन कराया करते थे।

स्वधर्म-रक्षक और परधर्म-प्रेमी माधवराव महाराज ने अपने केवल ३० वर्ष के शासन-काल में अपनी प्यारी प्रजा को स्वयं कह कर ही नहीं, वरन्—

"अपने अपने धर्म की, सब कोई राखत टेक।
कृष्ण निशानी एक है, तीरंदाज अनेक॥"

वाली उक्ति को चरितार्थ करके इस अलौकिक गूढ़ तत्व का विश्वास करा दिया (जिसको न जान कर अनेक भारतीय प्रजागण तथा अनेक राज्याधिकारी अपनी प्रजा में सार्वकालिक शान्तता सतत-चिरस्थायी रखने में नितान्त पंगु हो रहे थे।) कि सब धर्मों का मुख्य तत्व मोक्ष पाना है, सब धर्मावलंबी अपने अपने धार्मिक आचार्यों के आदेश किये हुए मार्ग पर चल कर एक ही ब्रह्मानद की प्राप्ति के लिये कटिबद्ध हो रहे हैं। सब धर्मों का यही निचोड़ है कि किसी धर्म की निन्दा नहीं करनी चाहिए, वरन् सब धर्मावलंबियों को आपस में बन्धु-प्रेम रख कर जीवन व्यतीत करना चाहिए। यही उच्च-कोटि की भक्ति है।

ग्वालियर राज्य की प्रजा के अन्तःकरण पर आप के इस महामंत्र का ऐसा प्रभाव पड़ा कि जहाँ भारत के अनेक स्थानों में भिन्न-भिन्न धर्मावलंबियों का जीवन परस्पर धार्मिक कलह के कारण संकट में व्यतीत होता है, उसके बिलकुल विपरीत आपकी छत्र-छाया के नीचे निवास करनेवाली प्रजा अपने अपने धर्म को पालती हुई सानन्द अपना जीवन व्यतीत कर रही है। किसी धर्म की निन्दा रूपी हिंसा न करने का अलौकिक और चमत्कृत आदर्श आप के धर्मात्मा होने का जीता जागता प्रमाण है।

महाराज माधवराव का स्वभाव-वर्णन

हाराज ऊँचाई में ५ फुट ६ इञ्च के थे। आपका रंग अधिक गौर वर्ण का न था, परन्तु आपके नेत्रों में अद्‌भुत सुन्दरता थी और इस कारण आप अत्यन्त स्वरूपवान् दृष्टिगत होते थे। आपका शरीर बड़ा सुन्दर और सशक्त था। यद्यपि आपके शरीर की सुन्दरता आपके अन्तिम दिनों में, बीमारी के कारण, कुछ नष्ट हो चुकी थी, तथापि इस बीमारी का असर आपकी प्रचंड काम करने की शक्ति पर कुछ नहीं हुआ था। अपने नेत्रों की शोभायमान छटा के कारण प्रत्येक दर्शक को आप एक अपूर्व शक्ति के व्यक्ति भासते थे। इन विशाल नेत्रों की शोभा आपके गंभीर विचार के समय, हास्य के समय, किसी पर अप्रसन्न होने के समय, तथा तीक्ष्ण कटाक्ष और विनोदात्मक हास्य के समय, ज्यों की त्यों बनी रहती थी। जब आप अत्यन्त क्रोध में रहते थे, उस समय भी आपके विशाल नेत्रों पर आपके हार्दिक प्रेमपूर्ण भावों की छटा बनी रहती थी; परन्तु क्रोध के समय आप के हाथों की उँगलियाँ हिल जाती थीं।

अपनी प्रजा तथा मित्रों के लिये आप साक्षात् देव-तुल्य ही थे। आप अपनी बराबरी वालों से यद्यपि प्रसन्नता से मिलते

जुलते थे, तथापि आप सर्वदा उनके अगुआ ही बने रहते थे। अपने सेवकों से समय-समय पर इतने कठोर बन जाते थे कि उनका मन भय से थर्राया करता था; परन्तु अपनी प्रजा के लिये तथा उन लोगों के लिये, जो सर्वदा आपसे भयभीत रहकर दबे रहते थे, आप सुखदायक ही थे।

जब आप अपनी फौजी जनरली पोशाक तथा अपूर्व छटा से भरी हुई दरबारी पोशाक धारण करते थे, उस समय आप की मूर्ति दर्शनीय मालूम होती थी। आप अपने शारीरिक बनाव सिंगार की तनिक भी परवाह नहीं करते थे। आपको इस बात की भी परवाह नहीं रहती थी कि हमारे पहनने के वस्त्र नये हैं अथवा पुराने, चटक मटकदार हैं या सादे। आपका मुख्य उद्देश्य सदैव यह रहता था कि वस्त्र पहनने के पश्चात् शरीर में किसी प्रकार की अड़चन न होते हुए सुख बना रहे। आप को बिना पहचाने जाने आने में बड़ा आनन्द मालूम होता था। पहचान वालों की ताजीम से बचते हुए आप अपनी खाकी पोशाक में निकल जाया करते थे और सर्व साधारण में मिल कर उनके सुख-दुःखों तथा व्यंग्य और तीव्र कटाक्ष रूपी वार्तालाप सुनने के हेतु से आप बहुधा मनुष्यों के बड़े-बड़े जमाव में से बिना पहचाने और एक दूसरे के धक्के खाते हुए निकलने में बहुत ही मनोरंजन मानते थे। बड़े-बड़े मेले-तमाशों की कठिन भीड़ में बिना पहचाने जा निकलने और अपने राज्य संबन्धी अनेक बातों और अपने ऑफिसरों की भलाई बुराई सुनने की आपको

खूब धुन बनी रहती थी। कभी-कभी आप अपने गुप्तचरों द्वारा सुनी हुई बातों की जाँच पड़ताल भी कराया करते थे।

आपको अपने राजकीय कार्य करने की बड़ी विचित्र धुन थी, यहाँ तक कि रेल में प्रवास करते हुए भी आप चैन से नहीं बैठते थे। जब आपको यह मालूम हो जाता था कि अमुक स्टेशन पर कुछ लोग मुझ से मिलने के लिये इकट्ठे हुए हैं, तब आप रात्रि में ही अपनी गाड़ी से उतर कर इधर उधर बैठ जाया करते थे। इसी प्रकार की अनेक लीलाओं से आपने संसार का और मनुष्य स्वभाव का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया था।

आप राजसी उत्सवों को छोड़ कर और कभी चित्ताकर्षक और मूल्यवान् रत्न-जटित आभूषण नहीं पहनते थे। कभी कभी आप देदीप्यमान् अमूल्य मोतियों का कंठा पहन लिया करते थे। जिस प्रकार आप अपने बैठने के स्थान की तथा स्वाद की परवाह नहीं करते थे, उसी प्रकार आप अपने शरीर के सुखों की, वस्त्रों की और आभूषणों की भी परवाह नहीं करते थे। परन्तु इस से पाठक लोग यह न समझें कि महाराज इन सब बातों में नीरस थे और उनमें रुचि नहीं रखते थे।

बड़े-बड़े नगरों में आप अपनी सादी पोशाक में अकेले निकल कर अपने स्वतः के क्रय-विक्रय के लिये बड़ी-बड़ी दूकानों में पहुँचना अधिक पसन्द करते थे। इतना ही नहीं, परन्तु किसी वस्तु के भाव-ताव में बड़ी देर तक दूकानदार से झंझट किया करते थे और उस वस्तु का ठीक मूल्य जान लेते थे। आप को

इस बात का पूरा निश्चय हो गया था कि दूकानदार लोग एकाएक किसी वस्तु का ठीक मूल्य नहीं बतलाते हैं। अधिक मोल-तोल करने के कारण दूकानदार लोग आपको "बनिया महाराज" के नाम से पुकारा करते थे; और आप इस नाम से अप्रसन्न होने के बजाय प्रसन्न हुआ करते थे। आप अपनी इस चतुराई के कारण अनेक राजा-महाराजाओं की अपेक्षा दूकानदारों के धोखे में कम आते थे।

आप में धैर्य धारण करने की और जाँच पड़ताल करने की बड़ी विचित्र शक्ति थी। महाराज जिस समय राजनैतिक विषयों को लेकर बड़े-बड़े दूरदर्शी राजनीतिज्ञ विद्वानों के सम्मुख अपना उद्देश्य कथन करते थे, उस समय आपके राजनैतिक सिद्धान्त के ज्ञान और गूढ़ नीति को सुनकर वे विस्मित और मुग्ध हो जाया करते थे। जिस समय आप अमूल्य आभूषणों और वस्त्रों को धारण कर बड़ी सज-धज के साथ राजसिंहासन पर विराजमान होते थे, उस समय आप की ज्वलन्त राज-सत्ता के प्रभाव और राजसी आतंक के भय से दरबारियों के मन दहल जाया करते थे। जिस समय आप राजकीय उत्सवों पर राजसी ठाठ से अपनी वृहद् और सुसज्जित सेना के बीच में बड़े-बड़े सेनाधिकारियों और राज्याधिकारियो तथा सरदारों को साथ लेकर नगर में प्रयाण करते थे, उस समय दर्शक वृन्द मार्ग के दोनों ओर खड़े होकर और गृह-लक्ष्मियाँ अटारियों पर से आप की अपूर्व छवि निरख कर हर्षित हुआ करती थीं, बाल-गोपाल

आल्हादित अन्तःकरण से आप की ओजस्विनी शोभा की घंटों बड़ाई किया करते थे। ऐसा जान किस मनुष्य को इस बात का स्वप्न में भी विचार हो सकता था कि यही मूर्त्ति शरद् काल की कठिन सरदी में प्रति वर्ष कृत्रिम युद्ध (मैन्युअर्स) को निरीक्षण करने के लिये १८-१८ घंटे अपने घोड़े की पीठ से नीचे न उतरते हुए नदियों, खाइयों और पहाड़ों को दिन भर लाँघते हुए, झोले में पड़े हुए चने फाँकते हुए और केवल दो पौंड की कुप्पी के पानी पर संतोष कर ऐसे महा कठिन सैनिक कार्य का सम्पादन करती है। और बड़े-बड़े सेनापतियों और सैनिकों की सूक्ष्म से सूक्ष्म त्रुटियों को जान कर उनको लज्जित कर और धमका कर सुधार का मार्ग बतलाती है।

महाराज का स्वास्थ्य जब तक अच्छा रहा, आपने गरमी सरदी की तनिक भी परवाह नहीं की। आप राज्य का काम कभी-कभी १८-१८ और २०-२० घंटे तक बड़े परिश्रम से किया करते थे। यहाँ तक कि तेज से तेज गरमी और लू चलने पर, बजाय अपने कमरे के दरवाजों को बन्द रखने के, चारों ओर के दरवाजे खोल कर काम पर डटे रहते थे। अपने काम में आप इतने तल्लीन हो जाया करते थे कि आप को समय पर अपने भोजन का भी ध्यान नहीं रहता था, जिसके लिये आप दूसरों को दोषी ठहराया करते थे।

आप में अनेक गुणों में से एक बड़ा भारी सद्गुण यह था कि आप कभी कर्ज नहीं लेते थे। इस मुख्य कारण से आप की

कीर्त्ति अधिक बढ़ी-चढ़ी थी। आप ने अपने आश्रित अनेक छोटे-छोटे रजवाड़ों और सरदारों तथा जागीरदारों को द्रव्य देकर जितनी आर्थिक सहायता की, उतनी शायद ही किसी अन्य राजा-महाराजा ने की होगी। आप का यदि समय पर कर्जदारों की ओर से द्रव्य वापस न आता, तो चित्त में अधिक खेद होता था। नियमित समय पर व्यवहार करनेवाले से आप बड़े प्रसन्न रहते थे। आप इस सिद्धान्त का जिस प्रकार दूसरों से पालन कराने में तत्पर रहते थे, उसी प्रकार स्वयं भी पालन करने में दक्ष थे। आप अपने बड़े-बड़े अधिकारियों का मान इस सिद्धान्त के विरुद्ध चलने पर कुचल दिया करते थे। आप प्रवास में अपने व्यय की छोटी से छोटी रकम का भी लेखा लिखा करते थे; और यदि किसी समय कारणवश कोई खर्च लिखने से रह जाता और बाद को स्मरण न आता तो आप को गुस्सा आता था।

आप अत्यन्त कठिन बीमारी के समय में, जब कि डॉक्टर लोग घबरा जाया करते थे, बड़े साहसी बने रहते। इस बात का आज भी अनेक लोग प्रमाण दे सकते हैं कि जब आप के पैर में दर्द हुआ था, उस समय आप की आँखों से अत्यन्त दुःख के कारण सुर्खी टपकी पड़ती थी और स्वयं भी पैर की तकलीफ के कारण अपने होंठ चबाया करते थे; परन्तु मुँह से आह अथवा कराहने का एक शब्द भी नहीं निकालते थे। दूसरों को कष्ट में देख उन पर दया प्रकट करते थे। उनके इलाज की उसी प्रकार

फिक्र रखते थे, जैसे आप अपने शरीर की करते थे; परन्तु दूसरों के रोने तथा कराहने को बड़ी घृणा की दृष्टि से देखते थे। आप के समान दुःख में सहायता करनेवाला भी कोई विरला ही होगा; और न आपके समान निराशा में आशा का संचार करने वाला कोई होगा। आप में स्वाभाविक दयालुता ओत-प्रोत भरी हुई थी। यह केवल आप के एक अनंत पौरुष का ही मुख्य कारण था। मृत्यु की गोद में लेटे हुए अपने ऑफिसरों के लिये आप साक्षात् दया के अवतार और अनुकंपा की मूर्त्ति ही थे।

आप स्वकीय और राजकीय व्यवहारों में तथा अपने विद्वान् राज-कर्मचारियों और आप्त-जनों से व्यवहार रखने में बड़े दक्ष थे। अपने आप्तों से बड़े प्रेमपूर्ण भाव से मिलते और मधुर शब्दों में वार्तालाप करते थे; परन्तु उस समय यदि किसी कर्मचारी से बर्ताव करने का आपको संयोग होता था, तो आप बड़ी रुखाई लिये हुए कठोर शब्दों से भाषण करते थे। आपके इस प्रकार के व्यवहार से संपूर्ण जन सदा भयभीत रहा करते थे; परन्तु इससे आपकी उज्वल कीर्ति पर किसी प्रकार का कोई आक्षेप नहीं करता था।

आप अपने योग्य और विद्वान् कर्मचारियों के सहवास से सदा प्रसन्न रहा करते थे, उस समय आप अपने राजसी मान अभिमान का विस्मरण कर दिया करते थे; और यदि कोई ऑफिसर ऐसे समय पर आपसे मिलने में आनाकानी करता था तो, आपको एक प्रकार का दुःख होता था। आप केवल इन मित्रों

से मिलते ही न थे, वरन् इन पर विश्वास करते थे और स्वकीय अथवा गृह-सम्बन्धी कार्यों में आप सलाह देने की प्रार्थना करते थे। परन्तु जब कभी आपको अपने ऑफिसरों के राज्य-सम्बन्धी कार्यों में किसी प्रकार की त्रुटि नजर आती थी, उस समय आप उन पर अत्यन्त क्रोध करते थे। अपराध की जाँच करते समय आप अपने कोमल अन्तःकरण को अत्यन्त कठोर बना लिया करते थे और अपराधी का अपराध सिद्ध हो जाने पर उसको आप कठिन दंड दिया करते थे। आप कर्तव्य से च्युत होनेवाले मनुष्य से उदासीन रहा करते थे।

आपका विद्याभ्यास अधिक नहीं हुआ था, तथापि यह नहीं कहा जा सकता कि आपको साहित्य से प्रेम नहीं था। आपको विज्ञान और सैनिक साहित्य से अधिक प्रेम था। रात्रि में जब कभी आपको नींद नहीं आती थी, उस समय आप डिटेक्टिव उपन्यास बड़े चाव से पढ़ते थे; और इस अभ्यास से आपको राज-कार्य में अच्छा लाभ हुआ था।

गायन-कला से आपका नैसर्गिक प्रेम था। आप स्वयं अपनी मधुर भरी हुई आवाज से गाते थे। आपको यह अच्छा ज्ञान हो चुका था कि कौन सा राग किस समय गाया जाता है। गाते समय आप ताल-सुर के साथ भाव बतलाने में भी सिद्धहस्त थे। चित्रकारी और शिल्प विद्या से आपको कम अनुराग था; परन्तु इनकी सुन्दरता से अत्यन्त प्रेम था। आपको यन्त्र-कला से घना प्रेम था और यह प्रेम आप में अन्तिम दिनों तक बना

रहा था। आप अपने जीवन के अन्तिम दिनों में रेल तथा मोटर से यात्रा किया करते थे और बड़े-बड़े सरोवरों में जलक्रीड़ा किया करते थे। जिन जिन मनुष्यों ने आपके मित्रत्व को चिरस्थायी रखा था, उनके नाम की आपने सड़कें आदि बनवा कर उनकी स्मृति को चिरायु करा दिया है। शिवपुरी की रायसिंग रोड और माईकल पियर इस बात के उदाहरण हैं। जिनसे आप अधिक प्रेम करते थे, उनके लिये आप सच्चे मित्र थे और उनके आपत्ति काल में आप शारीरिक और आर्थिक सहायता करते थे।

आप ब्योरेवार कार्य को संपादन करने में बड़े सिद्ध-हस्त थे। किसी सामाजिक कार्य की रचना करते समय आप भविष्य में आनेवाली अनेक बातों का अन्दाज कर लिया करते थे; परंतु कार्यविधि से रहित थे। जो मनुष्य क्रम से कार्य को संपादन करना पसन्द नहीं करते थे, उनको आप ताड़ना करते थे। जब आपके सामने कोई महत्वपूर्ण कार्य होता था, आप सदा उसमें संलग्न रहा करते थे और कभी-कभी रात में भी केवल ४ घण्टे से अधिक विश्राम नहीं करते थे। आप अपनी आयु के आन्तिम दिनों में सिगरेट से अधिक प्रेम करने लगे थे; और यह चाव आप में इतना अधिक बढ़ गया था कि दफ्तर के काम को सम्पादन करते समय भी बिना सिगरेट पिए नहीं रहते थे। जब कभी मिसलों का निरीक्षण करते समय आप के मुँह में सिगरेट नहीं होता था, तो ऐसा अनुमान होता था कि आप क्रोध में हैं।

माधवराव महाराज जिस प्रकार धैर्यवान्, उच्च कोटि के शासक, प्रजा के शुभचिन्तक, व्यापार में दक्ष, साहसी, कुशल शिकारी और दूरदर्शी थे, उसी प्रकार आप विनोदी, समाज-सेवक, दयावान ईश्वर पर भरोसा रखनेवाले और साधु-फकीरों के कृपाभिलाषी थे। इन बातों के एक नहीं अनेक उदाहरण मिलते हैं। हम अपने प्रिय पाठकों के लिये दो चार उदाहरण यहाँ दे देते हैं।

सन् १९११ ई० में जब आप इंग्लैन्ड गये हुए थे, तब आपने हरलिंग हेम स्थान पर घोड़े पर बैठ कर भाले से खूँटी उखाड़ने के खेल या चौगान में भाग लिया था, क्योंकि आप इस (टेन्ट पेगिंग) खेल में बड़े सिद्ध-हस्त थे। चारों ओर हजारों दर्शकों की अनेक कतारें थीं। सामने वहाँ की महिलाओं के बैठने का स्थान था जहाँ पर सैकड़ों बच्चे और स्त्रियाँ खेल देखने को बैठी थीं। जब आप की खूँटी उखाड़ने की बारी आई, सम्पूर्ण दर्शक गण बड़े उत्सुक भाव और आनन्द से आपको देख आपके वंशीय नाम (सेन्धिया) का उच्चारण करने लगे। अनेकों ने आपको करतल-ध्वनि से विजय प्राप्ति की सूचना दी। आपने अपने एक बड़े चंचल और तेज घोड़े पर बैठ हाथ में भाला ले खूँटी की ओर अपना लक्ष रख घोड़े को दौड़ाया और खूँटी भाले से उखाड़ ली। चारों ओर से आनन्द भरी चिक्कार और करतल-ध्वनि की गूँज से आपका घोड़ा एकाएक भड़क गया और आपके काबू से बाहर होकर पूरे वेग से दौड़ा। यह देख

सामने की महिलाएँ अपने अपने बालकों को गोद में लेकर भयभीत होने लगीं। अनेक दर्शकगण घोड़े की तेज दौड़ को देख भयभीत हो समझने लगे कि आज अनेक स्त्रियाँ कुचल जायँगी। जब आपने जाना कि घोड़ा रुकनेवाला नहीं है, तब आप बड़ी फुरती से घोड़े की पीठ पर से कूद पड़े और अपने हाथ में लगाम लिये हुए थोड़ी दूर घोड़े के साथ दौड़े और एकाएक लगाम को झटका देकर तुरन्त अपने बलवान् और सशक्त शरीर का संपूर्ण झुकाव दूसरी ओर डाल कर तेज घोड़े की गति एकदम रोक दी और अबलाओं के जान-जोखों के संकट को एकाएक जादू के समान टाल दिया। इस साहसयुक्त बुद्धि-चातुर्य के कारण आपको उसी समय "हीरो ऑफ दी हर्लिंगहेम" की उपाधि से विभूषित किया गया था।

सम्राट् अकबर के राजत्व काल में लोक-प्रसिद्ध गंगालहरी के रचयिता भक्त जगन्नाथ अपने निर्मल और स्वच्छ अन्तःकरण से प्रेमपूर्वक जगत्-तारिणी श्रीगंगाजी की स्तुति कर उनको अपने समीप बुलाने में समर्थ हुए थे; परन्तु भक्त महाराज माधवराव सन् १९२० ई० में करेरा स्थान पर अपने प्रेमल और दयापूर्ण भाषण के द्वारा निर्दय और कट्टर डकैतों से उनके शस्त्र अपने पैरों पर रखवाने में यशस्वी हुए थे।

जब आप सन् १९११ ई० में सम्राट् पंचम जॉर्ज के राज्यारोहण के उत्सव के लिये इंग्लैन्ड पधारे थे, उस समय आपने

अपने एक श्रेष्ठ पदाधिकारी (सरसूबा मालवा प्रान्त) को प्रवास करते हुए एक पत्र लिखा था। वह पत्र इस प्रकार है—

"बालमुकुन्दजी साहब, हम सब आनन्द से हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके प्रान्त में राज-कार्य सानन्द सम्पादित हो रहा होगा। आज सायंकाल हम लोग स्वेज पर पहुँचे। हम सब यहाँ के दृश्य को देखने में संलग्न हैं। सब को मेरी राम राम कहिये। यह पत्र मैं आपको खानगी रूप से लिख रहा हूँ, सरकारी तौर पर न समझें; वर्ना आप इस साधारण पत्र की भी एक मिसल दायर कर देवेंगे।"

श्रीकृष्ण भगवान् ने रणस्थल पर वीर अर्जुन को कर्मयोग के सिद्धान्तों को श्रवण करा कर अनेक प्रकार से अपने आत्म-समान सखा को क्षत्रियत्व के गूढ़ तत्वों का मनन करा कर जिस प्रकार युद्ध करने पर तत्पर करा दिया था, उसी प्रकार महाराज माधवराव ने अपनी प्राण समान प्रजा को अपने दूरदर्शी विचारों से अनेक राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक सिद्धान्तों के गूढ़ तत्व समझाते हुए विभिन्न धर्म के प्रजागणों को आपस में सद्भाव और हेल-मेल रखने के महा-मंत्र से केवल दीक्षित ही नहीं किया था, वरन् बर्ताव करने पर कटिबद्ध करा दिया था। यही कारण है कि सेन्धिया की छत्र-छाया के नीचे निवास करनेवाली प्रजा आपस में बन्धु-प्रेम रखती हुई आज अपना जीवन व्यतीत कर रही है। किसी विद्वान् का कहना है कि:—

न्याय से जोड़ा हुआ धन, धर्म में जिसका लगा।
आत्म-सुख वह पा गया, अरु भाग्य भी उसका जगा॥

होता नहीं कोई धनी, कर के कमाई पाप की ।
मलिन मन जलता सदा है, आग में संताप की ॥

उपर्युक्त सिद्धान्त के अनुसार आप ने रिश्वत लेने देने को बन्द करने के लिये दृढ़ संकल्प किया; और यही कारण है कि दौरे में जाकर साधारण कर्मचारी से लेकर बड़े से बड़े अधिकारी तक के राज्य-संबन्धी कार्यों में रिश्वत लेने देने की ब्योरेवार कहानी गुप्तचरों द्वारा बड़ी सावधानी से सुना करते थे। इस कुप्रथा को रोकने के लिये आप पहले पहल मनुष्यों को घूंस देने लेने की बुराई समझाते रहे (आपका कहना था कि हम को परमात्मा ने आज जो पद दिया है, उसका कार्य हमको सचाई के साथ करना चाहिए। याद रक्खो, पाप की कमाई से मनुष्य अपनी आत्मा को सदा के लिये मलिन बना लेता है, सदा भयभीत रहता है, अवनति के गहरे दलदल में जा फसता है, और परमात्मा तथा अपने मालिक को धोखा देता है।) परन्तु आप के अनेक बार समझाने पर भी जब लोगों ने कुछ ध्यान नहीं दिया और रिश्वत का व्यापार दिनों-दिन अधिक बढ़ता ही गया, तब अन्त में आप ने दोनों व्यक्तियों (रिश्वत देने और लेनेवाले) को कठिन दंड देना आरंभ कर दिया। इस कठिन दंड के प्रभाव से राज्य में रिश्वत का व्यापार बहुत कम हो गया था।

आप परिश्रम और सचाई से काम करनेवाले मनुष्य को, चाहे वह साधारण वर्ग का हो अथवा अधिकारी वर्ग का, प्रति

वर्ष अपने जन्म-दिवस के दरबार में सोने-चाँदी के तमगे, पोशाक तथा द्रव्य अपने हस्ताक्षर की सनद के साथ पारितोषिक में दिया करते थे। आप सच बोलनेवाले पर बहुत प्रसन्न होते थे और उससे बड़े प्रेम से बातचीत किया करते थे। एक समय की बात है, आपने गौशाला में रहने वाले एक ग्वाले से पूछा कि क्यों जी, तुम गायों का दूध कभी-कभी तो जरूर पीते होगे? इस प्रश्न के उत्तर में उस भोले ग्वाले ने हाथ जोड़ कर कहा कि महाराज, हम लोग प्रति दिन थोड़ा सा दूध निकाल कर अपनी रूखी-सूखी रोटियों को दूध में मल कर अपना पेट भरते हैं। इस सत्यवक्ता की स्पष्ट बातों से आप बहुत प्रसन्न हुए और उसी वर्ष आपने अपने जन्म-दिवस के दरबार में उस ग्वाले को कुछ धन पारितोषिक रूप में दिया था।

आप अपने राज्य में व्यापार की उन्नति करनेवालों से प्रेमपूर्वक घन्टों वार्तालाप किया करते थे। ऐसे व्यापारियों को केवल धन से ही सहायता नहीं करते थे, वरन् उनका व्यापार सुचारु रूप से चलाने के लिये उनकी सामयिक और स्थानिक अनेक प्रकार की असुविधाएँ दूर कर दिया करते थे। आपने एक बार मालवा प्रान्त के एक व्यापारी की असुविधाओं को जान कर उससे कहा कि तुम यहाँ के पदाधिकारी से मिल कर उनको अपने व्यापार की सब अड़चनें बतलाओ, वह तुम्हारी सहायता करेंगे। इतने पर भी यदि तुम्हारी व्यापार सम्बन्धी कुछ अड़चनें रह जायँगी, तो मैं स्वयं उनकी व्यवस्था कर दूँगा।

वह व्यापारी मन में हर्षित होकर अपने घर चला गया और समयानुसार अपने व्यापारिक कष्टों को दूर कराने के हेतु से अधिकारी के समीप पहुँच कर उनसे अपनी सारी कथा कह सुनाई; परन्तु उन्होंने कुछ उत्तर नहीं दिया। व्यापारी ने, हताश न होकर, दो चार बार उक्त पदाधिकारी के स्थान पर चक्कर लगाये; परन्तु उसका सब परिश्रम निष्फल गया और वह जैसे-तैसे कर अपना व्यापार चलाता रहा।

दो वर्ष के पश्चात् महाराज के उस प्रान्त के निरीक्षण के समय उस व्यापारी ने महाराज से पुनः अपने कष्टों को निवारण करने की प्रार्थना की। आपने व्यापारी के कष्टों की उचित व्यवस्था करते हुए उस अधिकारी को निम्नलिखित मर्मभेदी ताड़ना सुनाई थीः—

"आज पदवी बढ़ जाने में ही सभ्यता की शान है। स्वाभाविक हँसी को दबा कर उसके बदले मुस्करा देना, स्वाभाविक स्थिति को छिपा कर सब से अच्छे भाग को सामने रखना, वस्तुतः हम जैसे नहीं हैं, उससे अधिक बड़े और अच्छे होने का ढोंग रचना, अपने विचार, चाल-ढाल, आचरण, पोशाक और धन-ऐश्वर्य को अच्छा समझना ही गौरव की बात है, गरीब मनुष्य को चतुराई से ठग लेना ही सभ्यता है, गरीबी पोशाक वाले मनुष्य को देखते ही मुँह फिरा लेना, उसके सभ्यतापूर्ण प्रश्न का उत्तर न देना, विदेशी अपरिचित की ओर

उदासीन भाव से देखना और जब वह बात-चीत शुरू करे, तो न बोलना ही बड़प्पन और शराफत है।"

महाराज जान जोखों के समय में भी कभी विचलित नहीं होते थे, वरन् दैवी कृपा से संकट निवारणार्थ उसी क्षण कोई युक्ति विचार कर बाल-बाल बच जाया करते थे। इस बात का एक अद्भुत दृष्टान्त इस प्रकार है:—

सन् १९०७ ई० के अक्टूबर मास में आप अपने साथ बालक सरदार बाला साहब बड़े शितोले को लेकर बम्बई से स्पेशल द्वारा ग्वालियर आ रहे थे कि रेलवे कर्मचारियों की असावधानी से आप की स्पेशल गाड़ी १४ अप पेसेन्जर गाड़ी से आंतरी स्टेशन पर टकराने वाली ही थी कि आप की दृष्टि इस होने वाली अघटित घटना की ओर अचानक जा पड़ी और तत्काल बालक शितोले को अपनी गोद में उठा कर आप चलती गाड़ी से तुरन्त कूद पड़े। आप के कूदने की देर थी कि उसी क्षण दोनों गाड़ियाँ आपस में टकरा गईं, उनके डिब्बे छिन्न-भिन्न हो गये। आप के इस अनोखे साहस की वार्ता सुन कर ग्वालियर राज्य के तथा भारत के अनेक स्थानों से लोगों ने तार भेज कर आपको बधाई दी थी। दूसरे दिन बम्बई से जी० आई० पी० रेलवे कम्पनी के बड़े-बड़े अधिकारियों ने आंतरी स्टेशन पर पहुँच कर इस घटना की जाँच की; और ग्वालियर पहुँच कर आप से निवेदन किया कि क्या महाराज को इस कम्पनी से किसी प्रकार का उलाहना है? आप ने स्पष्ट रूप से "नहीं" कह

दिया। आप की इस अनोखी दया से कृतज्ञ होकर जी० आई० पी० रेलवे कम्पनी ने आप के एक मूल्यवान् सेलून के नष्ट-भ्रष्ट हो जाने के बदले में दो बड़े-बड़े मूल्यवान् सेलून भेंट किये थे। इस प्राणघातक महासंकट के टल जाने की खुशी में ग्वालियर की जनता ने उसी वर्ष माधव ऑर्फनेज की स्थापना की थी।

महाराज अपने ध्येय के अनुसार जब किसी कार्य का सांगोपांग संपादन करना निश्चित कर लेते थे, तब कठिन से कठिन विघ्न उपस्थित होने पर भी चिन्ताग्रस्त तथा भयभीत नहीं होते थे, वरन् बड़ी चतुराई के साथ कार्य का संपादन कर दिखलाते थे। यह बात नीचे के उदाहरण से स्पष्ट होगी:—

सन् १९२१ ई० में श्रीमान् प्रिन्स ऑफ वेल्स के भारत-भ्रमण के समय महाराज शाहू छत्रपति, कोल्हापुर ने आप से पूर्ण विचार कर के यह निश्चय किया कि पूना में छत्रपति शिवाजी के स्मारक की आधार शिला श्रीमान् प्रिन्स ऑफ वेल्स के हाथ से स्थापित कराई जाय। और आप ने अपने इस निश्चित विचार की सूचना बम्बई के गवर्नर को देते हुए उनका भी परामर्श ले लिया। परंतु पूना के नूतन विचार के लोगों ने इस उत्सव में नाना प्रकार की बाधाएँ खड़ी करने का पूर्ण निश्चय कर लिया। महाराज माधवराव को जब यह समाचार मालूम हुआ तो आप स्वयं स्मारक के शिला-रोपण की तिथि के पन्द्रह दिन पहले पूना पहुँच गये और वहाँ की परिस्थिति को समझ कर आप ने तार द्वारा संदेशा पहुँचा कर ग्वालियर से

स्पेशल गाड़ियों द्वारा सब सामान, मण्डप-संबन्धी कुल सामग्री और अनेक कार्य-कुशल तथा चतुर मनुष्यों को पूना में बुलवा कर बड़े समारोह के साथ स्मारक के शिलारोपण उत्सव की समाप्ति शान्तिपूर्वक की थी और बड़ी चतुराई से विघ्न-संतोषी लोगों को नीचा दिखलाया था।

महाराज जिस प्रकार राज-कार्य में कुशल थे और सैनिक कार्य में चतुर थे, उसी प्रकार आप एक प्रवीण शिकारी भी थे। आप सत्य धर्मावलम्बी तो थे, परन्तु अन्ध-विश्वासी नहीं थे। आपने अपनी रचित अनेक पुस्तकों में "रहबरे शिकार" नामक पुस्तक की भी रचना की है। इस पुस्तक में शिकार को जाने के समय किस प्रकार के चिन्ह (सगुन या असगुन) होने पर शिकार मिलता है अथवा नहीं मिलता, इसका अपने बरसों के अनुभव से आपने अच्छा विवेचन किया है।

आपके राजत्व काल में ग्वालियर अतिथि-सत्कार के लिये विशेष रूप से प्रख्यात हो गया था। आप अतिथियों को महलों में कई दिनों तक बहुत आग्रहपूर्वक ठहराते थे, राज्य के अनेक नैसर्गिक और सुरम्य स्थान दिखला कर उनका मनोरंजन करते थे और उनके इच्छानुसार शेर, रीछ, हिरन आदि के शिकार की व्यवस्था करते थे। यह शिकार एक दिन में ही नहीं समाप्त होता था, प्रत्युत् पृथक पृथक स्थानों पर कई दिनों तक होता रहता था।

आपके जीवन में शिकार करते समय दो बड़े भयंकर प्रसंग उपस्थित हुए थे। उनका विवरण सुनने मात्र से चित्त विचलित हो जाता है। परन्तु परमात्मा की असीम दया से ऐसी भयंकर स्थिति में भी आप में तत्काल अपूर्व साहस का संचार हो गया और आप मृत्यु के मुख से बाल-बाल बच गये थे।

एक बार भारत के वाइसराय लॉर्ड रीडिंग को महाराज ने सन् १९२२ ई० के शरद् काल में शिकार के लिये निमंत्रित किया। शेर के शिकार की कुल व्यवस्था शिवपुरी में कराई गई। टेलीफोन के द्वारा आपको ग्वालियर समाचार दिया गया कि खेर खो पर शेर ने भैंसे को घायल किया है। दूसरे दिन आप लॉर्ड महोदय को मोटर द्वारा शिवपुरी ले गये और उसी दिन सायंकाल को शेर का शिकार खेलने के निमित्त आप लॉर्ड रीडिंग के साथ घने जंगल में, खेर खो पर पहुँचे। हाँका करनेवालों ने सूचना पाकर हाँका किया और शेर सामने से निकला। लॉर्ड महोदय ने गोली चलाई, पर वह शेर के मर्म स्थान न लग कर दूसरी जगह लगी। गोली के लगते ही उस घायल शेर ने भयंकर रूप धारण किया और बात की बात में हाँका करनेवालों में से एक मनुष्य की बोटी बोटी कर डाली और एक शिकारी को बुरी तरह घायल कर के वह तत्काल घने जंगल में जा छिपा। हाँकेवाले मनुष्य की लाश के टुकड़े और शिकारी को घायल देख आप तुरन्त हाथी से उतर अपनी बन्दूक सँभालते हुए घायल शेर की खोज में घने जंगल

में अकेले ही घुस गये। संध्या हो गई, अँधेरा छा गया, परन्तु महाराज के मिलने का अथवा वापस आने का कोई समाचार नहीं मिला। यह जानकर सब लोग बड़े व्याकुल और चिन्तित हुए और उजियाले की शीघ्र व्यवस्था करके उस घने जंगल में आपको ढूँढ़ने लगे, परन्तु आपका पता नहीं लगा।

थोड़ी देर के बाद आप एक गढ़े के किनारे को पकड़ते और ऊपर चढ़ते हुए दिखलाई दिये। आप पसीने से शराबोर थे, और खाकी साफा आपके सिर पर नहीं था। शेर के मार डालने के हर्ष में आपको अपने अस्तव्यस्त शरीर का भी कुछ ध्यान नहीं था। आपने कुछ मनुष्यों को मशालों के साथ जाकर उस गढ़े में मरे हुए शेर को ऊपर लाने की आज्ञा दी और आप कैम्प को रवाना हुए। आपकी यह विचित्र स्थिति और अद्भुत साहस देख कर उपस्थित जनता चकित हो गई। इस शेर की लम्बाई ११ फुट ९ इंच थी। आपको इस साहसपूर्ण कार्य के लिये लॉर्ड महोदय ने बधाई दी और भविष्य में किसी घायल शेर के पीछे न जाने के लिये बहुत समझाया था।

महाराज का बहुत दिनों से यह नियम चला आ रहा था कि दशहरे के दूसरे दिन पास के जंगल में जाकर हिरन का शिकार करते थे; और अगर उस दिन हिरन न मिलता तो वह वर्ष शिकार के लिये अनेक प्रकार की बाधाओं से परिपूर्ण समझा जाता था। इसी प्रथा के अनुसार आप सन् १९२४ ई० के दशहरे के दूसरे दिन कुलेथ के जंगल में, जह अधिकता से

हिरनों के गरोह के गरोह सदा रहा करते हैं, शिकार के लिये अपने साथ केवल २७५ बोर की बन्दूक रख और दो साथियों को मोटर में बैठा कर प्रातःकाल रवाना हो गये। मार्ग में मोटर छोड़ कर आप अपने दोनों साथियों के साथ जंगल के अन्दर घुस गये और घनी झाड़ियों में हिरनों को खोजने लगे।

अनायास पास की एक झाड़ी से बजाय हिरन के एक शेर निकल पड़ा और आपके सामने खड़ा होकर गुर्राने लगा। दोनों साथी यह भयानक दृश्य देख कर तुरन्त लेटते हुए झाड़ियों में घुस गये; परन्तु आपको हटने तक का भी अवकाश नहीं था। महाराज तनिक भी विचलित अथवा भयभीत न हुए; वरन् अपनी बन्दूक शेर के सामने तान कर उसकी दृष्टि से दृष्टि मिलाये हुए जम कर खड़े रहे। ईश्वरीय प्रेरणा से थोड़ी देर बाद वह शेर गुर्राता हुआ जंगल की ओर चला गया। उसका वहाँ से हटना ही था कि उसी क्षण उसी घनी झाड़ी से एक शेरनी बाहर निकली और आप की ओर झपटी; परन्तु आप उसी प्रकार उसके सामने भी डटे खड़े रहे। दैव-कृपा से शेरनी भी थोड़ी देर के बाद जंगल को चली गई। आपने भी ईश्वर को कोटिशः धन्यवाद देते हुए वहाँ से प्रस्थान किया और अपने साथियों को पीछे फिर कर देखने लगे। परन्तु उनको वहाँ न देख पास की झाड़ी में से निकलते हुए देख आप को बड़े जोर की हँसी आई। इस हँसी को छिपा कर आप कहने लगे कि आज परमात्मा ने मुझे जीवन दान दिया है। इसके

बाद अपने साथियों के साथ आप महलों में वापस आ गये। आप के इस जानजोखों के महा संकट के निवारण होने पर राजधानी के समस्त मन्दिरों और मसजिदों में दीपक जलाये गये थे और प्रजा की ओर से कथा और मौलूद कराई गई थी, अनेक दीन-दुखियों को भोजन वस्त्र दिये गये थे और ब्राह्मणों को दान दिया गया था।

महाराज जिस प्रकार उच्च कोटि के राज्य-संचालक थे, फौजी कार्यों में दक्ष थे, वाणिज्य में दूरदर्शी तथा निपुण थे, कट्टर स्वधर्मावलम्बी थे, बड़े दानवीर और चतुर शिकारी थे, उसी प्रकार सब तरह के खेलों में भी आप बहुत चतुर गिने जाते थे। पूर्वीय खेलों में खो खो, हाँड़ी, आस्या-पास्या, कुश्ती, दौड़ इत्यादि खेल आपको बहुत पसंद थे और पाश्चात्य खेलों में पोलो, टेन्ट पेगिंग, घोड़े को सरपट दौड़ाते हुए कुंडों में गेंद डालने आदि खेलों में आप सिद्ध-हस्त माने जाते थे।

सन् १९२२ ई० के फरवरी मास में जब प्रस्तुत प्रिन्स ऑफ वेल्स ग्वालियर पधारे थे, उस समय अपने यहाँ के अच्छे खिलाड़ियों को, जो अनेक प्रकार के हिन्दुस्थानी खेलों को जानते थे, मोती महल के विशाल भवनों के सन्मुख बैंजा ताल पर एकत्र करके उनके भारतीय अद्‌भुत और प्रेक्षणीय खेल असंख्य नागरिकों को, राज्य के कर्मचारियों को, प्रिन्स ऑफ वेल्स को, युवराज जॉर्ज जीवाजीराव सेंधिया को और श्रीमती मॅरी कमला राजा साहिबा को दिखला कर आश्चर्यचकित करा दिया था।

महाराज माधवराव को जिस प्रकार अपने धर्म में अनुराग था, परमात्मा में विश्वास था, उसी प्रकार ज्योतिष शास्त्र में भी श्रद्धा थी। आप बड़े-बड़े नामांकित ज्योतिर्विद् लोगों से कभी-कभी अपनी जन्म-कुण्डली दिखला कर ग्रहों के फल बड़े चाव से श्रवण किया करते थे।

आपके स्वर्गवासी होने के दो वर्ष पूर्व की बात है कि आप एक बार कलकत्ते गये थे। वहाँ एक विद्वान् ज्योतिषी की आपने ख्याति सुनी कि वह भविष्य बहुत सच कहा करते हैं। बस फिर क्या था, उसी समय आप अपनी सादी खाकी पोशाक पहन कर और किराये की गाड़ी पर सवार हो एक साधारण व्यक्ति के ढंग से उस विद्वान् के स्थान पर पहुँचे और विनीत भाव से प्रणाम करके एक ओर बैठ गये। थोड़ी देर में आपने बिना कुछ कहे हुए अपनी जन्म-कुण्डली ज्योतिषीजी के सामने रख दी। ज्योतिषी महोदय ने कुण्डली उठा कर जन्म के ग्रहों पर अच्छी तरह दृष्टि डाल कर कहा कि आप कोई असाधारण व्यक्ति मालूम होते हैं। कुण्डली के ग्रह तो कहते हैं कि आपको कहीं का राजा होना चाहिए। अतएव पहले आप यह कहें कि आप कौन हैं? तत्पश्चात् मैं इस कुण्डली का हाल कहूँगा। ज्योतिषीजी के ऐसा कहने पर आपने अपना सच्चा परिचय उनको दिया। ज्योतिषीजी ने आपका उचित आदर-सत्कार करते हुए कहा कि महाराज, आपकी कुण्डली में शनि अत्यन्त बलवान है। इन्हीं के प्रताप से आप सर्वदा कठिन से कठिन

कार्यों को सरलतापूर्वक सम्पादन करते हुए यशस्वी हो रहे हैं। परन्तु अब इस ग्रह का बल कम हो गया है। मैं आपको स्पष्ट रूप से इस कुण्डली का भविष्य सन् १९२५ ई० के पश्चात् बतलाऊँगा।

ज्योतिष शास्त्र में पूर्ण श्रद्धा होने के कारण आपको विश्वास हो गया था कि दूसरा विवाह करने पर मुझे सन्तान-सुख होगा; और यह भी आपको अनुमान हो गया था कि युवराज की किशोरावस्था प्राप्त होने के पहले मेरी जीवन-यात्रा समाप्त हो जायगी। अतएव आपने अक्टूबर सन् १९१६ ई० में भारत के महाराजाओं की सभा—नरेन्द्र मंडल—में प्रथमतः यह महत्वपूर्ण प्रश्न रखा कि किसी शासक के बाल्यकाल (minority) में बालक महाराज के विद्याभ्यास तथा शासन की शिक्षा की व्यवस्था किस प्रकार की होनी चाहिए। इस विषय में आपने अनेक राजा-महाराजाओं की अनुमति लेते हुए भारत सरकार का भी ध्यान इस ओर आकर्षित करके और उनकी अनुमति लेकर, नियम निर्धारित कर दिये थे।

महाराज को अपने जीवन के संबंध में ज्योतिषियों के द्वारा यह निश्चय हो गया था कि हमारा आयुष्य-क्रम अब अधिक दिनों तक नहीं चलेगा। आपने यह बात किसी पर प्रकट न करते हुए अपने हृदय में ही रखी थी। इसकी सत्यता आपके सन् १९२५ ई० में पश्चिमीय यात्रा करने के पूर्व, राज्य संबंधी तथा अपनी निजी व्यवस्था को लेखबद्ध करने से भली-भाँति मालूम

होती है। आपने इस लेख की रजिस्ट्री राजधानी के हाई कोर्ट में स्वतः पहुँच कर करा दी थी, जिसमें आपने अपने संपूर्ण राज्य के संचालन का भार अपनी मजलिस खास के विश्वासपात्र मेम्बरों को सौंपते हुए अपने निज के स्थान (President of Council) पर अपनी अनुभवी बड़ी महारानी चिनकू राजा सेंधिया को नियुक्त किया था। उसी समय अपने साधारण स्मारक बनवाने का स्थान अपनी पूज्य माता जांजा महाराज की (शिवपुरी में) छत्री के समीप अंकित कर गये थे।

बड़े-बड़े वैभव वाले, बड़ी आयु वाले, अगाध महिमा वाले संग्राम-शूर कालकवलित हो चुके हैं। बहुत से पराक्रमी, बहुत से युद्ध करने वाले, अनेक प्रकार का बल रखने वाले मृत्यु के ग्रास बन चुके हैं। बड़े-बड़े सम्राट्, राजा महाराजा और अनेक श्रेष्ठजन भी इसी मार्ग का अवलम्बन कर चुके हैं। बहुतों के पालक, बुद्धि के चालक, ज्ञानवान् और धार्मिक भी इस संसार से बिदा हो चुके हैं। इन्हीं के सदृश हमारे चरित नायक महाराज सर माधवराव सेंधिया का भी तारीख ५ जून सन् १९२५ ई० को स्वर्गवास हो चुका है; परन्तु संपूर्ण भूमण्डल के चालकों को, प्रत्येक देश के नेताओं को अपनी अपनी जाति का, अपने देश का और अपने नगर का उत्थान करने के हितार्थ एक बड़े सारगर्भित महा-मंत्र से उसी प्रकार दीक्षित कर गये हैं, जिस प्रकार श्रीकृष्ण भगवान् ने रण-स्थल पर अर्जुन को कर्मयोग

के सिद्धान्त से दीक्षित कर के युद्र-कार्य में प्रवृत्त करा दिया था। महाराज का वह भावपूर्ण मंत्र यह था—

—हे जन सज्जन कर वही, जाते यश रहि जाय।
चन्दन देह घिसाय निज, पर-तन देइ बसाय॥

५

पुस्तक मिलने का पता:—

(१) केशवराम गोविन्दराम जोशी,
नयाबाजार, लश्कर (ग्वालियर).

(२) शाह चिम्मनलाल फूलचंद,
व्यवस्थापक, ग्वालियर पेपर एण्ड स्टेशनरी स्टोर्स,
नयाबाजार, लश्कर (ग्वालियर).

आलीजाह दरबार प्रेस, ग्वालियर.